मानव मन्दिर

FORM IV

(See Rule 8

Place of Publication	Manavta Mandir, Hoshiarpu
Periodicity of Publication	Monthly
Printer's Name	M. R. Bhagat
Nationality	Indian
Address	Manavta Mandir, Hoshiarpu
Publisher's Name	M. R. Bhagat
Nationality	Indian
Address	Manavta Mandir, Hoshiarpu
Editor's Name	Seth Durga Dass
Nationality	Indian
Address	House No. 2, Sector 19—A Chandigarh.
Name and address of individuals, who owner the news paper or partners, or shareholders, holding more than one percent of the total capital.	Faqir Library Charitable Trust, Hoshiarpur.

I, M.R. Bhagat hereby declare that the particular given above are true to the best of my knowledge and belief,

Signature of Publisher

Dated . 10.2.77

Printed and Published by M. R. Bhagat at Sudhakar Printers, Ashok Nagar, Hoshiarpur for the Faqir Library Trust, Hoshiarpur

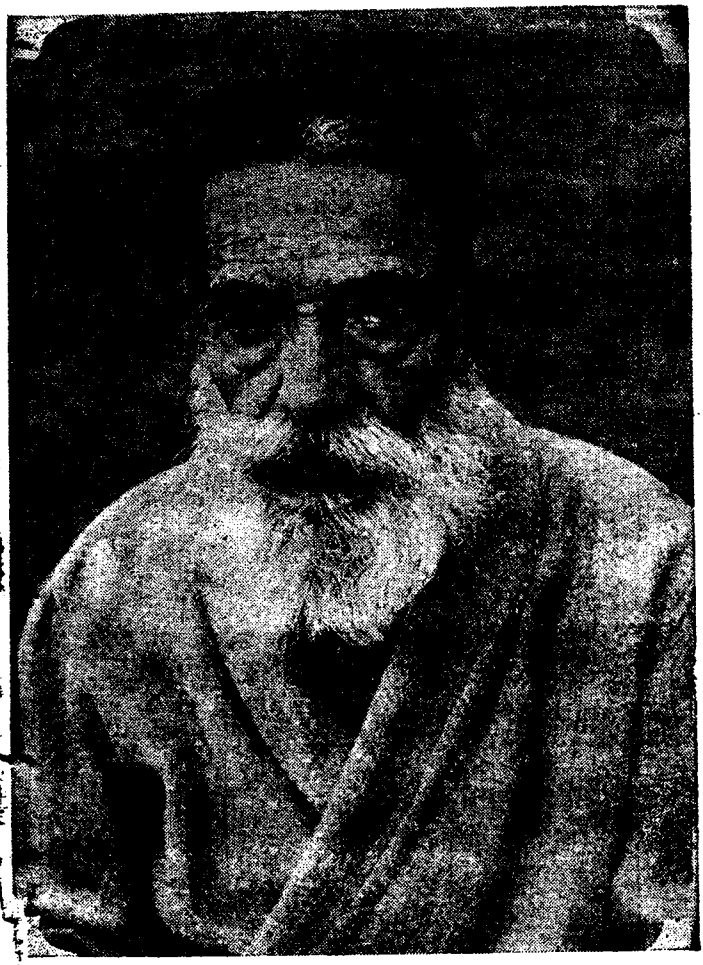

परमसन्त, परमदयाल
श्री पण्डित फकीर चन्द जी महाराज

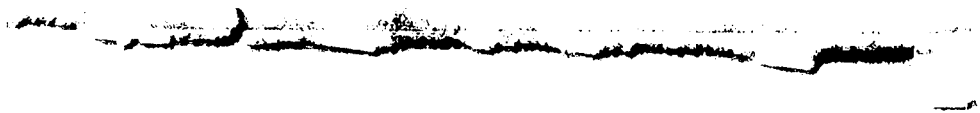

मासिक—

मानव मन्दिर

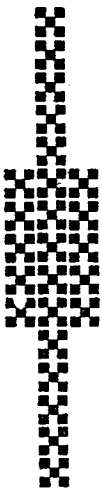

संरक्षक :
परम दयाल पं० फ़कीरचन्द जी महाराज

सम्पादक :
सेठ दुर्गादास जी

वर्ष ३	फरवरी १९७७	संख्या १०

नये साल का पैगाम

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

ता० १-१-७७

न काशी न काबा न कैलास में है ।
तू देख अपने घट में तेरे पास में है ॥
तेरे घट के भीतर वह मालिक बसा है ।
न मसजिद न मन्दिर न आकास में है ॥
नहीं खाली उस से यह सारा जहां है ।
कहां देखता किस की तालास में हैं ॥
लगा बन्द तीनों सुरत को चढ़ाओ ।
अनहद की धुन घट के आकास में है ।
गंगां के जल से नहीं होगी तृप्ति ।
चलो घाट मन के जो तू प्यास में है ॥
वह व्यापक हो रग रग में आकर समाया ।
तेरी जान तन में तेरी सांस में है ॥
भरम में पड़ा तू किधर ढूंढता है ।
गुरु तेरे अन्तर वह प्रकाश में है ॥

कहीं नाम है और कहीं बेनिशां है।
हमारे ही मन के वह विश्वास में है॥
राधास्वामी ने भेद अपना बताया।
उसे मिलने की युक्ति अभ्यास में है॥

राधास्वामी ! आप लोगों को नये साल की मुबारक हो। मैं नये साल का सन्देश देना चाहता हूं। मुद्दत हुई और बरसों गुज़रे जब मेरे अन्तर राम को मिलने का जज़्बा पैदा हुआ था। मौज या मेरे कर्म मुझ को हज़ूर वाता दयाल जी महाराज के चरनों में ले गये। आज लगभग बहत्तर (७२) साल मुझे संत मत में आये हुये हो गये हैं। सब लोग यह कहते हैं कि मालिक अन्तर में है। कोई मज़हब यह नहीं कहता कि वो मालिक आदमी के अन्तर नहीं रहता। मगर मुझे यह पता नहीं लगता था। हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने दया की और मुझे यह गुरु पदवी दे दी। जब से मुझे यह पता लगा कि मेरा रूप लोगों के अन्तर जाग्रत स्वप्न और समाधि में प्रकट हो कर उन की सहायता करता है, दवाईयां बता जाता है, सुरतें चढ़ा जाता है और मरते समय ले जाता है मगर मुझे पता नहीं होता है तो मुझे यकीन हो गया कि जो कुछ मेरे अन्तर में प्रकट

होता है जिस को मैं राम या भगवान मानता था वो मेरा अपना ही विश्वास था। यही बात हजूर दाता दयाल जी महाराज ने इस शब्द में कही है।

न काशी न काबा न कैलास में है।
तू देख अपने घट में तेरे पास में है॥
कहीं नाम है कहीं बेनिशां है।
हमारे ही मन के वो विश्वास में है॥
राधास्वामी ने भेद अपना बताया।
उसे मिलने की युक्ति अभ्यास में है॥

अब मैं इस नये साल का क्या संदेश देना चाहता हूं कि ऐ मानव जाति! तुम ईश्वर और खुदा के नाम पर बटे हुये हो, किसी ने उस को खुदा या अल्लाह या रहमान कहा और किसी ने उसे ईश्वर, परमेश्वर या दयाल कहा। उस का कोई नाम नहीं और सब नाम उसी के हैं और यह सब नाम इन्सान ने रखे हैं। इस का जहां तुम्हारा जी चाहता है, जहां तुम्हारा विश्वास है और जिस से तुम को प्यार है वो नाम ले कर विश्वास करो और विश्वास से रूप बनाओ। किसी भी शक्ति ने बाहिर से आ कर तुम्हारी सहायता नहीं करनी, तुम्हारी सहायता तुम्हारे विश्वास ने करनी है।

अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि अगर मेरा ही विश्वास सब कुछ है तो फिर वो मालिक क्या है। क्या मैं ही मालिक हूं ? हमारे अपने आप के सिवाय हमारे अन्तर और कुछ नहीं रहता। अगर तुम्हारे अन्तर में राम आता है या गुरु आता है तो वो तुम्हारा अपना ही विश्वास है। तो फिर वो असली चीज़ क्या है ? अगर मैं कह दूं कि इन्सान का अपना आप ही असली चीज़ है तो अकली दलील ले तो ठीक है मगर अगर बो अपना आप ही सब कुछ है तो फिर वो जो चाहे कर सके, मगर वो नहीं कर सकता। मैंने बड़े बड़े सन्तों के हालात देखे। पलटू साहिब जैसे जो अपने आप का दावा कर गये उन का अंजाम मैंने पढ़ा है और देखा है। चूंकि हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे हुकम दिया था कि फकीर ! चोला छोड़ने से पहले तालिम को बदल जाना। इसलिये अपने निज अनुभव के आधार पर और मौजूदा और पिछले सन्तों और महापुरुषों, जिन्होंने ऐसी वानियां कहीं कि सब कुछ हमारे पास है, उन के हालात को देख कर मैं तालीम को बदले जा रहा हूं और घोषना करता हूं कि ऐ मानव ! तू

उस महान महान महान ताकत का एक छोटा सा अणु है। ज़रा तू सोच तो सही ऐ वेदान्ती ! और अपने आप को खुदा कहने वाले ! ज़रा आंख तो खोल कि यह कितनी बड़ी दुनियां है। यहां कितने सूरज हैं कितने चान्द हैं, और कितने लोक लोकान्तर हैं। इस दुनियां में तेरी हस्ती ही क्या है। ऐ भूले हुये इन्सान ! तेरे अन्तर एक अकल आ गई है और उस अकल का नाम है माया। वो अकल ही तुम को खुदा बनाती है और वो अकल ही तुम से सब कुछ करा रही है। इसलिये किसी पहुंचे हुये शुद्ध मति वाले महा पुरुष के पास जा कर अपनी अकल को ठीक कर ले।

यह सारा संसार स्थूल सूक्ष्म और कारण प्रकृति का है। स्थूल प्रकृति का ज्ञान इन्सान ने हासल किया। देख लो इन्सान ने क्या कुछ नहीं किया। बिजली बनाई, ऐटम बम्ब बनाये, चान्द पर चढ़ गया इत्यादी इत्यादी। ऐसे ही मन का ज्ञान या सूक्ष्म प्रकृति का ज्ञान है और वो है तुम्हारा अपना ही संकल्प और तुम्हारी अपनी ही बासना और तुम्हारी अपनी ही नीयत। इस दुनियां में जीने के लिये और अपने

शारीरिक आराम और सुख के लिये मौजूदा विज्ञान का सहारा लो। मन की शान्ति और तसकीन के लिये अपने ख्याल, भाव मौर विचार शुद्ध रखो और आत्म अवस्था में जाने के लिये अपने अन्तर प्रकाश का साधन करो। यही हजूर दाता दयाल जी महाराज ने लिखा है।

भरम में पड़ा तू किधर ढूढ़ता है।
गुरु तेरे अन्तर वो प्रकास में है॥

हम गुरु को या मालिक को बाहर समझते हैं वास्तब में वो बाहर नहीं है। मैं खुद बाहर समझता था मगर आप सत संगियों की दया से मुझे असलीयत का पता लग गया। इस समय गुरु इज्म तमाम संसार को जुदा जुदा फिरकों पन्थों गद्धियों और मज़हबों में बांट रहा है। मैं उस मालिक को या गुरु को ढूंडता हूं और मैं ने उसे पाया है। वो किसी मज़हव का गुरु या सन्त नहीं है। आज कल कोई राधास्वामी मत का सन्त है, कोई सिक्खों का सन्त है, कोई जैनियों का सन्त है और कोई मुसलमानों का संत या पीर है। जो आदमी अपने अन्तर में प्रकाश और शब्द का साधन करता है वो उस मालिक का सन्त हो

जाता है और फिर वो किसी मज़हब, पन्थ, या फिरके का सन्त नहीं होता।

चूंके मेरे जिम्मे तालीम को बदल जाने की डयूटी है। मैं किसी बात का दाबा नहीं करता। मैं ने जो अनुभव किया और समझा वो कहा और कहता हूं ऐ इन्सान ! जब तक जिन्दगी है यह विश्वास रख कि तेरा जो अपना आप है वो किसी बड़ी ताकत का अणु है। यह संसार प्रकृति का है। इस में शारीरिक नियमों को समझ कर अपनी सेहत का ख़्याल रख। मन की धारों को विचार कर शिव संकल्प रख और आत्म पद को पाने के लिये अपने अन्तर प्रकाश और शब्द का साधन किया कर। जीवन मिला है दूसरों की सहायता किया कर और दूसरो से सहायता लिया कर, बाकी रहा प्रकृति की गूढ़ बातों का राज़, अपनी अपनी बोलियां बोल कर सब चले गये। मेरी समझ में तो प्रकृति का पूरा राज किसी को मिला नहीं। जिन्होंने अपने आप को खुदा का बेटा बनने का दावा किया या गुरु, रसूल पीर पैग़म्बर और अवतार बनने का दावा किया, उन की जिन्दगी का अध्यन करने से मैं यह समझता हूं कि किसी को भी कुदरत के

पूरे राज़ का पता नहीं लगा। इसलिये शरणागतम्। जब तक जीवन है शरणागतम् हो के रहो। अपनी संगत अच्छी रखो और नियमबद्ध हो के जिन्दगी गुज़ारो। वो सब का मालिक है।

सब को राधास्वामी

जिन्दगी से प्यार ना करना ही सच्चा साधन है।

लेखक :—सेठ दुर्गादास साहिब, चण्डीगढ़।

राधास्वामी। परम दयाल जी महाराज फरमाते हैं कि जिन्दगी का मिलना ही पतित पना है। यह कैसे ? बात समझने के लिये मुशकल नज़र आती है। एक सत्संगी मेरे पास आया उसने इस विषय पर मुझ से पूछ ताछ की। वो इस का मतलब समझना चाहता था कि जिन्दगी कैसे पतित ठहरी। हज़ूर के बचनों से जो मैं ने समझा वो उसको समझाता रहा। ईम्वर की पूजा भक्ति और सुमिरन वह करता है जो पतित है। पतित और पापी ही ईश्वर की पूजा किया करते हैं। यह जिन्दगी हम को मिली है क्योंकि हम पतित हैं। पतित हुए तमी जिन्दगी मिली। अगर पतित और पापी न होते फिर संसार में हमारा जन्म क्यों होता कभी किसी मुक्त पुरुष का भी इस ससार में जन्म

हुआ है ? नहीं नहीं। जन्म उस का होगा जो पतित है। नौ महीने अन्धेरी कोठरी में सिर नीचे पांव ऊपर कर के पड़ा रहना क्या बुरे कर्मो का फल नहीं है ?

हम समझते हैं कि हम ज़िन्दगी में आज़ाद हैं। यह तो स्वप्न, हां केवल स्वप्न है कौन सा प्राणी आज़ाद है। इस संसार में कोई भी आज़ाद नज़र नहीं आता। सब जीव बन्धे हुए हैं। जीव और फिर आज़ाद, यह कैसे ? अगर बन्दा है कर बन्दगी फिर आज़ादी कहां ? आज़ादी का क्या मतलव ?

भाई, हम ने कोई पाप किया, हमको सज़ा मिली हुकम हुआ कि कैद की सजा है, कैद काटो, बहुत अच्छा, स्वीकार कर लिया, कैद काटने के लिए चल पड़े, पहले मुझे अंन्धेरी कोठरी में बन्द कर दिया, सिर नीचे पांव ऊपर, मलमूत्र में ९ महीने पढ़ा रहा बड़ी साधना, बड़ी तपस्या, बड़ी प्रार्थना के बाद मुझे बाहर आने का हुकम मिला बाहर आया हुकम मिला कि यह बच्चे हैं, यह बीबी है, यह बूढ़े बूढ़ी हैं, यह

व्यापार है। इन बच्चों का पालन तुम्हारे जिम्मे है स्त्री को खुश रखना, मां बाप की सेवा करना और व्यापार करना. व्यापार करके धन कमाना, लेकिन धन पर तुम्हारा कोई हक न होगा, हां धन का तुम प्रयोग कर सकते हो। यह कैद की शरतें हैं मुझे मंजूर करनी पड़ गई। मैंने कैद काटनी शुरू कर दी बाल बच्चों को पालता हूं, इन को पढ़ाता हूं, स्त्री को खुश रखने की कोशश करता रहता हूं, माता पिता की सेवा करता रहता हूं प्रातः काम पर जाता हूं, रात को घर वापस आता हूं, आराम नहीं, शान्ति नहीं, फ़िकर और चिन्ता से घिरा रहता हूं। कभी बीमारी है. कभी दुख है, और मौत का डर हमेशा रहता है। जिन्दगी के दिन गिन-गिन कर काट रहा हूं। भला कैद में शान्ति और आराम ? कैद तो सज़ा होती है इसलिये यह ज़िन्दगी पतितपना है।

यह मेरी जिन्दगी है, जिन्दगी मिली है सज़ा काटने के लिये। जो काम मैं इस जिन्दगी में करता हूं वो सब कैद काटने के लिये करता हूं। फिर जिन्दगी पतितपना ही ठहरी। फिर बुढ़ापा आ गया कानों से सुना नहीं जाता नज़र बहुत कमजोर हो चुकी है।

हाज़मा दुरुसत नहीं है। खुराक हज़म नहीं कर सकता। कमज़ोरी आती जा रही है। रात को नींद नहीं आती, चला जाता नहीं, कोई काम कर नहीं सकता बेकार वक्त काटना मुशकिल हो रहा है। बीमारों की तरह चारपाई पर पड़ा रहता हूं। कौन इसको जिन्दगी कहेगा। यह किस किसम की जिन्दगी है। क्या ऐसी जिन्दगी सज़ा नहीं ? फिर यह जिन्दगी पतित ही ठहरी।

पूजा करो. साधन करो, दान करो, प्रोपकार करो, सेवा करो, जो दिल में आये करो, यह सब पतित (कैदी) काम करते है ताकि कैद से जलद छूट जावें। नेक काम करने से कैद कम हो जाया करती है। अगर आप चाहते हैं कि दोबारा कैद की सज़ा ना मिले तो इस जिन्दगी से प्यार करना छोड़ दो। स्वाल है कि जिन्दगी से प्यार कैसे छूटेगा। जिन्दगी हो और जिन्दगी से प्यार न हो यह कैसे मुमकिन है ? मेरा तो जिन्दगी की हर चीज़ से प्यार है। बच्चों से प्रेम, स्त्री से लगन, गुरु से लगन, सतसंग से लगन, क्या बताऊं किस किस चीज़ से मेरी लगन है, प्यार है। जिन्दगी से प्यार न करो यह निहायत्

कठिन है। यह बात अनुभव के योग्य है, यह राज़ है, यह हकीकत है जो किसी संत सतगुरु वक्त के सतसंग से समझ आवेगी।

स्वाल है कि आप कौन हैं ? फरमाते है :—

आप आप को आप पहचानो।
कहा और का नेक न मानो।

इस जिन्दगी से छूटने का एक तरीका है कि आप कौन है ? क्या आप ने कभी जानने की कोशिश की ? क्या आप शरीर हैं ? नहीं, मैं शरीर नहीं हूं, शरीर तो खाक मैं मिल जायगा। नष्ट भ्रष्ट हो जायगा। क्या मैं मन हूं ? नहीं। मैं मन नहीं हूं मन भी समाधि की हालत में नहीं रहता। फिर आप कौन हैं ? मैं सुरत हूं। सुरत पार ब्रह्म की एक किरन है। इस किरन ने जिन्दगी बनाई। अब इस जिन्दगी को सुरत में लय कर दो वो पार ब्रह्म से मिल कर एक हो रहेगी। फिर कैद खतम, जन्म मरण खतम और आवागवन खतम हो जावेगा।

ज़ात पात ना पूछे कोई।
हरि को भजे सो हरि का होई।

नोट :—परम दयाल जी महादाज ने इस विषय पर एक सत्संगी को खत लिखा है जो कि मानव मन्दिर में माह नवम्बर सन १९७६ में छपा हुआ है। आप इस खत को पढ़ सकते है।

जीने का राज़

सतसंग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

ता० २४ अगस्त १९७५

कोई दुख सुख का नहीं दाता, तेरी है भूल सब।
करम अपने करते हैं. अनुकूल और प्रतिकूल सब।
कर्म की प्रधानता की, क्या नहीं तुझ को समझ।
करम से आनन्द है, और करम ही है सूल सब।
जो ठगेगा वह ठगा जायेगा, निस्संदेह आप।
प्रेमीजन ही पाते हैं और प्रेम के बहुमूल सब।
अपनी करनी आप भरनी, पड़ती है संसार में।
अपने घर की आप उठाया, करते ही है चूल सब।
किस भरम में तू पड़ा, ओरों की बातें छोड़ दे।
काम लग अपने कर ले, कर्म निज अनुकूल सब।
राधास्वामी नाम भज, झगड़ों से बच कर रह सदा।
जो नहीं समझा तो पढ़ना, लिखना होगा धूल सब।

राधास्वामी। मेरी जिन्दगी सफर करती हुई चली आ रही है। आज हैदराबाद से एक आदमी आया। मैंने उस से पूछा कि भई, तू क्यों आया है तो वो कहने लगा कि बाबा जी, मेरा काम नहीं चलता। वो दरज़ी का काम करता है। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि फकीर! यह इतनी दूर से और इतना खर्च करके तेरे पास आया है क्या तू कोई मन्त्र मार सकता है जिससे इसका काम चल जाय? मैंने उस से पूछा कि क्या तेरा ध्यान बनता है और क्या तेरे अन्तर मूर्ति बनती है? नहीं, हर एक आदमी को जो कुछ मिलता है वो उसके अपने ख्याल, अपने कर्म, और अपने विश्वास का फल मिलता है, चाहे कोई पीर, पैगम्बर वली हो, अवतार हो या संत हो। मैंने उससे पूछा कि क्या तुम्हारे घर में लड़ाई झगड़ा है? उसने कहा कि हमारे घर में लड़ाई झगड़ा और अशान्ति बहुत ज्यादा है। मेरा इलम बिल्कुल ठीक है कि जिस घर में अशान्ति है वहां से सुख और सम्पत्ति भाग जाते हैं। जिस के घर में क्लेश है वहां बरकत नहीं।

जिस घर कलह कलन्तर वसे।
उस घर घड़ियों पानी नसे।

जिस घर में झगड़ा है वहां तो घड़े से पानी भी सूख जाता है। गोसाईं तुलसी जी ने लिखा है।

जहां मुमति तहां सम्पति नाना।
जहां कुमति तहां विपद निदाना।

हमारी अमीरी और गरीबी का कारण हमारे कर्म हैं, दुख और सुख हमारे कर्मो का फल है। अब यह आदमी आया है हैदराबाद से और कहता है कि बाबा जी! मेरा काम नहीं चलता। मैं सोचता हूं कि फकीर! अपने आप को संत सत गुरु कहते हो क्या तुम किसी का कुछ कर सकते हो? नहीं। गुरु ने तो तुम को तरीका बताना है जिस से कि तुम उन्नति कर सको और वो तरीका यह यह है कि अपने मन में इच्छा शक्ति (*Will Power*) पैदा करो और आत्म विश्वास हो। इच्छा शक्ति को बढ़ाने का तरीका है साधन और अभ्यास। जिस तरह मिसमरेज़िम वाले दीवार पर एक काला और गोल निशान बना कर उस को देखते हैं और यह चाहते है कि यह फूल बन जाये। जब वो उनको फूल दिखाई देने लग जाता है

तो उन के अन्तर सिद्धी शक्ति आ जाती है। उन का यही साधन है। गुरु मत में गुरु स्वरुप का ध्यान है। अगर कोई आदमी सांसारिक उन्नति चाहता है तो वो अपने मन को अकाग्र करे सुमिरन करे ध्यान करे। मैं यह नहीं कहता की मेरा ध्यान करो। जहां जिस का विश्वास है वो उस रूप को अपने अन्तर बनाये, इससे इच्छा शक्ति बढ़ जायेगी और तुम्हारी इच्छा के अनुसार तुम्हारे काम होते रहेंगे। जिन्दगी में सफलता प्राप्त करने का यह गुर है। इसलिये सुमिरन ध्यान बताया जाता है। मैं यह नहीं कहता कि राधास्वामी मत के मुताबिक करो। राधास्वामी मत तो निर्वाण की तरफ ले जाता है। संसारी लोगों को यह चाहिये कि अपनी वासनाओं को ठीक रख कर अपने अन्तर साधन करें और अपने घरों में शान्ति रखें। इन्सान के ख्याल में बहुत ताकत है। यह सारा संसार संकल्प मय है और मनोमय है। "जैसा ख्याल वैसा हाल जैसी मति वैसी गति"। इस आदमी को यह वहम है कि इस के साथ वाले दुकानदार ने इस को कोई जादू किया हुआ है।

इस के बारे हजूर दाता दयाल जी महाराज का शब्द सुनो :–

कोई दुख सुख का नहीं दाता, तेरी ही है भूल सब।
करम अपने करते हैं, अनुकूल और प्रतिकूल सब॥
करम की प्रधानता की, क्या नहीं तुझ को समझ।
करम से आन्नद है और करम ही है सूल सब।

यह शब्द मेरे नाम था, मैं बग़दाद में था, मेरे पिता जी ने मेरे नाम एक खत लिखा। इसमें उन्होंने लिखा कि बरादरी वाले मुझे तंग करते हैं। मैंने वो चिट्ठी हजूर दाता दयाल जी महाराज को भेज दी। यह शब्द उन्होंने मेरी चिट्ठी के जवाब में मुझे भेजा था, वो लिखते हैं कि कोई किसी को दुख सुख नहीं देता यह सब कर्म की बात है। भूल जाओ कि तुम्हारा किया हुआ कर्म मुआफ हो जावेगा। कर्म के फल स्वरूप सुख दुख जरूर मिलता है। अब यह आदमी हैदराबाद से आया है। मेरे दिल में ख्याल आया कि यह आदमी इतना खर्च करके यहां आया है। मैं इसकी क्या सहायता कर सकता हूं। मैं सच्चाई पंसद इन्सान हूं। में समृद्धि शाली होने का गुर बता सकता हूं कि अपने घरों में प्रेम और शान्ति से रहो।

एक दूसरे से नफरत मत करो अपना और अपने घर वालों का भला चाहो। रूहानियत का न तो हर आदमी अधिकारी है और न ही हर एक आदमी रुहानियत को समझ सकता है। इसलिये मैंने तालीम को बदल दिया है। अगर तुम लोग घरों में एक दूसरे से नफरत करते हो तो तुम उस के फल से बच नहीं सकते। तुम आये हो, मेरे दिल में तुम्हारे लिये दर्द है। मैं फूंक नहीं मार सकता। सब से पहले आदमी विश्वास करे लेकिन विश्वास वो कर सकता है जिसका मन काबू में है, अगर मन काबू में नहीं है तो विश्वास नहीं बैठ सकता। तुम को दो बातें बता देता हूं कि एक तो अपने अन्तर विश्वास पैदा करो और दूसरे यह भूल जाओ कि दूसरे दुकानदार ने जादू किया हुआ है। आदमी की जिन्दगी में ऊच नीच आती रहती है। नल और दमयन्ति का क्या हाल हुआ है। देश के बटवारे के समय लाखों अमीर लोग गरीब हो गये और लाखों गरीब आदमी अमीर हो गये। सब को कर्म का फल भोगना पड़ता है। सच्ची बात बताता हूं सुनो! हम को नुकसान क्यों होता है। हम दूसरों का हक खाते हैं और हेरा फेरी करते हैं। कृष्ण और सुदामा की

जिन्दा मसाल तुम्हारे सामने है। गुरु जी ने लकड़ियां लेने के लिये भेजा। माता जी ने उन को चने दिये कि रात को दोनो खा लेना। जंगल में कृष्ण और सुदामा रात को एक वृक्ष पर बैठे हुये थे। चने सुदामा के पास थे कृष्ण जी को पता नहीं था। सुदामा कृष्ण जी से चोरी धीरे धीरे चने चबाने लग गया। कृष्ण जी ने पूछा क्या चबा रहे हो, सुदामा ने कहा कि सरदी से दान्त बज रहे हैं। अब तुम देखो कि सुदामा के सारी जिन्दगी दान्त ही बजते रहे। जो लोग अपने घरों में ऐक दूसरे से चोरी करते हैं उनके हां दरिद्रता का आना अनिवार्य है। मैं अपने घर की बात बताता हूं। मेरे पिता जी और मेरे ताया जी एक साथ रहते थे। मेरी माता जी और मेरी तायी दोनों सगी बहनें थी। दोनों के बच्चे थे। एक जगह खाना बनता था। हमारे घर में यह हाल था कि अगर मैं रोटी खाने बैठता तो मेरी माता जी मुझे ज़्यादा घी देती और हदायत करती कि किसी को बताना नहीं। एसे ही मेरी मासी जी किया करती होंगी। जब तक घर में यह हालत रही, हम बहुत

गरीब रहे। इस हालत को देख कर मैंने कहा कि जुदा हो जाओ और अपना कमाओ और खाओ।

मैं वो सत्संग कराता हूं जो तुम्हारी अमली जिन्दगी में काम आये और तुम सुखी रहो। मैंने सेठ दुर्गादास से कहा था कि तुम लोगों का ठेकेदारी का काम सांझा है अगर ऐक सिगरट भी पियो अपने नाम लिखो। किसी मज़दूर की मेहनत मत रखो और सरकारी माल बलैक में मत बेचो। फिर अगर तुम लोगों को घाटा पड़ जाय तो मैं ज़िम्मेदार हूं। उस ने सोलह साल काम किया और उसको कभी भी घाटा नहीं पड़ा। हम अपने दुखों के आप जिम्मेदार हैं। हम को जीने का राज़ नहीं आता। हम घरों में एक दूसरे से चोरी करते हैं तो फिर हम को ग़रीबी क्यों ना आये और हम दुखी क्यों न हों, जो मेरे साथ गुज़री वो बताता हूं। मैं नौकरी में था। मेरे पिता और ताया जी घर में इक्कठे थे। सांझा काम था। ऐक दफ़ा मेरी मां ने कहा कि बच्चा! मैंने फ़लां औरत के चालीस रुपये देने हैं। मैंने कहा कि दे दूंगा। अकस्मात ऐक दिन वो औरत मुझे मिली। मैंने कहा कि माई! आपके चालीस रुपय मेरी माता

जी ने देने हैं वो आपको मैं दे दूंगा। उस औरत ने कहा कि बच्चा ! वैसे तो वो रुपये तुम्हारी माता जी से ले लिये थे। मेरी माता जी ने मुझ से परदा रखा। ऐसी बातें हमारी ग़रीबी का कारण थी। हम आपस में जुदा हो गये तो बरकत हो गई। मैं आप लोगों को संसार में सुखी रहने का गुर बता रहा हूं। अपना हृदय शुद्ध रखो। घरों में हेरा फेरी मत करो। जहां सच्चाई है वहां बरकत है। मुझे देखो मैंने कभी हेराफेरी नहीं की और मैं बहुत खुश हूं। देश में देखो हेरा फेरी करने वाले आज जेल जा रहे हैं और दुखी हैं। यह अपने दुख के आप जिम्मेदार हैं। यह सब कर्म का फल है। मैंने आप को किताबों के हवाले नहीं दिये, अपनी जिन्दगी के अनुभव के आधार पर आप को बताये हैं। सब को कर्म का फल मिलता है। अगर तुम धनी बनना चाहते हो तो ईमानदारी से कमाओ और उस में से दुखियों की सहायता करो। तुम को मिलता रहेगा। जो देता नहीं उस को मिलता नहीं। यही हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने लिखा है कि।

कोई दुख सुख का नहीं दाता।

इससे मुझे निश्चय हो गया कि जैसा कर्म करूंगा उसका वैसा ही मुझे फल मिलेगा। अब देखो कि एक आदमी दुकानदार है वो एक भोले आदमी से तो और रेट लेता है और एक चालाक आदमी से और रेट लेता है तो दुकान में बरकत कहां से आयेगी। सरकार बहुत अच्छा कर रही है कि रेट लिस्ट दुकान पर लटकाओ। मैं ऋषि राम जी की दुकान पर गया, सामने वाली दुकान से ऐक तखती ली, उसने चार आने मांगे। श्री ऋषि राम जी ने कहा कि कुछ कम कर दो वो कहने लगा कि अच्छा साढ़े तीन आने दे दो, मैंने कहा कि दो भाव क्यों ? मैंने खुद दुकान की है। मैं केवल सात चीज़ें रखता था, ऐक नौकर रखा हुआ था। पूरा तोल और ऐक बोल। मेरी दुकान पर साल में ३५० मन कप्पास आई थी।

ऐक दिन जब मैं घर वापस आया तो मेरी औरत ने मुझे बताया कि आज कप्पास को आग लग गई और बड़ी मुशकिल से बुझाई। मैं सोचने लगा कि ऐसा क्यों हुआ। नौकर से पूछा कि क्या कोई हेरा फेरी की है ? नौकर मान गया। जो

आदमी सच्चाई पर चलता है उस को कोई तकलीफ नहीं होती। मैंने कभी हेरा फेरी नहीं की और मुझे कोई तकलीफ नहीं हुई। सब हमारे ही प्रारब्ध कर्म और इस जन्म के कर्मों का फल हम को मिलता है। इसलिये हाय २करने से कुछ नहीं बनता। अपनी नीयत को ठीक रखो और कर्म को ठीक रखो। मेरे पास शुभ भावनायें है। तुम को प्रसाद कर दूंगा अगर तुम्हारा विश्वास है तो तुम्हारे दिन फिर जायेंगे और अगर विश्वास नहीं है तो न मैं कुछ कर सकता हूं और न कोई और कुछ कर सकता है :--

कर्म की प्रधानता की, क्या नहीं तुझ को समझ।
कर्म से आनन्द है, और कर्म ही है सूल सब॥
यह जगत है बाटिका, करते हैं प्राणी आ के काम।
कर्म के अनुसार इन के, कान्टे हैं और फूल सब॥

कर्म क्या है? आदमी की नीयत् ही कर्म है, नीयत पर मुराद है। जिन लोगों ने रिशवत ली है और मकान बनाये हैं और जायदादें बनाई हैं वो अब फंस रहे हैं। बो जायेंगे कहां, कर्म का कानून अटल है। कोई आदमी भूख से नहीं मरता मगर हम में लालच है कि यह भी आ जाय और वो भी आ

जाय इसलिये हेरा फेरी करते हैं। अपनी नीयत् को ठीक रखो और साधन अभ्यास से अपने ख्याल की ताकत को बढ़ाओ। अपने अन्तर मूर्ति बनाओ जब इच्छा शक्ति बढ़ जायेगी तो तुम्हारी इच्छायें बहुत हद तक पूरी होती रहेंगी। लेकिन अगर तुम्हारी इच्छा बुरी होगी तो पूरी तो वो भी हो जावेगी मगर इससे तुम्हारा भी और दूसरों का भी नुकसान हो जायेगा। चूंकि लोगों के ख्यालात ठीक नहीं हैं इसलिये मैं किसी को नाम नहीं देता केवल सत्संग कराता हूं और जीने का राज़ बताता हूं। तांत्रिक विद्या वाले भी साधन करते हैं। वो दूसरों का नुकसान भी कर देते हैं। अगर कोई आदमी मेरी बात को समझ कर मेरा सत्संग करे तो उस का कल्यान हो सकता है। तुम लोग आये हो मैं अपनी जिम्मेदारी को महसूस करता हूं। यह आदमी इतना खर्च करके हैदराबाद से आया है मैं अपने आप से पूछता हूं कि फकीर! तू इस के लिये क्या कर सकता है? में इसको सच्चाई बता सकता हूं कि भई! यह तेरे ही कर्म का फल है। दुख भी और सुख भी सब तुम्हारे कर्म का फल हैं इससिये अपने कर्म को ठीक रखो और अपने

अन्तर साधन करो। लोग आते हैं मैं कोई बात किसी को कह देता हूं उस का काम हो जाता है, मैं नहीं करता उन का विश्वास करता है।

जो ठगेगा वो ठगा जायेगा निसन्देह आप।
प्रेमी जन ही पाते हैं और प्रेम के बहुमूल सव।

कुदरत का यह कानून है कि जैसा करोगे वैसा ही उसका फल मिलेगा, उसी समय मिल जाय या दस साल बाद मिले या बीस साल बाद मिले लेकिन मिलेगा ज़रूर। जहां आप सुमिरन ध्यान करते हो वहां नीयत को भी साफ रखो वरना और गिर जाओगे। हर एक आदमी सोचे कि उसने जिन्दगी में क्या क्या किया है। कर्म के फल को कोई रोक नहीं सकता। मैंने सन्तों और महात्माओं की जिन्दगीयां देखी हैं मुझे वहम आ गया है कि यह बड़े बड़े भक्त थे और अभ्यासी थे इन को तकलीफ क्यों हुई ? रूप तो सब महात्माओं का उनके चेलों के अन्तर प्रकट होता है लेकिन किसी ने भी चेलों को यह सच्चाई नहीं बताई कि भई ! मैं तुम्हारे अन्तर नहीं गया तो फिर तुम खुद सोचो कि उन को तकलीफ या कष्ट क्यों न हो। आज यह सबक ले जाओ कि

अपनी नीयत को साफ रखना है। जिस के सिर पर कर्ज नहीं वो बादशाहों का बादशाह है। एक दो रोटी से ज़्यादा तो कोई नहीं खाता फिर हेरा फेरी किस लिये करते हो। और दूसरे जो जोव भी यहां आता है वो अपना भाग्य ले कर आता है। तुम विश्वास करो कि तुम्हारी लड़कियों की शादीयां बड़ी असानी से हो जावेंगी, मालिक खुद प्रवन्ध करेगा। तुम दूर से आये हो किसी ने कोई जादू नहीं किया है मालिक का विश्वास रखो। सुवह सच्ची नीयत से दुकान पर जाओ, काम करो और अपने काम को गुरु के हवाले करो, बरकत ही बरकत हो जावेगी।

राधोस्वामी मेरी बेनती प्रेम से सुन लिजिये।
चित हटा कर जगत से, चरणों की छाया दोजिये॥

पहली बातें तो दुनियां की थी। दुनियां में चढ़ाव उतार आते रहते हैं। दुनियां में जो दुखी होते हैं जब उन को यह यकीन हो जाता है कि यहां सुख नहीं है तो फिर इस तरफ आते हैं और फिर वो मालिक के आगे प्रार्थना करते हैं।

"चित हटा कर जगत से चरनों की छाया दीजिये"।

गुरु के चरण हैं प्रकाश और प्रकाश हमारे अन्तर में है। सनातन धर्म भी यही कहता है कि

अपने अन्तर में सावित्री अर्थात सूर्य (प्रकाश) के दर्शन करो। जो आदमी परमार्थ चाहते हैं वो बाहर के किसी कामल गुरु का सत्संग कर के अपने अन्तर में प्रकाश को पकड़ें। जिन के अन्तर ज्योति जलती है उनके दुनियां के तमाम काम होते रहते हैं। इसलिये साधन जरूर करना चाहिये। तुम ने मन को एकाग्र करना है, चाहे राम राम से करो, चाहे अल्ला अल्ला कर के करो, चाहे वाहिगुरु वाहिगुरु कह कर करो, चाहे पांच नाम से करों। जब मन एकाग्र हो जावेगा तो उस के बाद प्रकाश प्रकट होगा। जब प्रकाश आ गया तो समझो कि बेढ़ा पार हो गया।

मन हो निश्चल ध्यान धरने से वो उकताय नहीं।
सुरत ठैहरे और ठैहरने से वो घवराय नहीं॥

अभ्यास के समय मन कभी इधर जाता है और कभी उधर जाता है। मेरा भी जाया करता था मगर अब नहीं जाता। मेरा मन जब कोशश करने पर भी नहीं ठहरता था तो मैं दीवार पर सिर मारा करता था, ऐसे ही मैंने दो तीन तम्बूरे क्रोध में आ कर तोड़ हिये थे। वह पिछले जन्मों के संस्कार होते हैं, जो दिमाग़ पर पड़े हुये होते हैं और वही

अभ्यास के समय आते है। उनको कोई रोक नहीं सकता। इस का इलाज है 'इशक'-प्रेम। इसलिये इस प्रेम की फिलम से पहली फिल्मों को दबा दिया करो। मगर जब प्रेम का जज्वा कम हो जावेगा तो फिर वही फिल्म सामने आने लगेगी। फिर यह ज्ञान से जायगी। मेरी फिल्में अव तक भी मेरे सामने आती हैं मगर मैं उनको माया समझ कर काट देता हूं कि यह हैं नहीं केवल भासती हैं। जैसे तुम सिनिमा में जो कुछ देखते हो वो दरअसल हैं नहीं ऐसे ही अपने अन्तर की फिल्म को ज्ञान से काटा जाता है। फिर उस का दमाग़ पर असर नहीं होता। और कोई तरीका इन फिल्मों को काटने का नहीं है, हां! एक और तरीका इन फिल्मों से वचने का यह है अि अपने आप को इन फिल्मों से ऊपर ले जाओ। जो आदमी बाबे फकीर का या किसी और गुरु का ध्यान करता रहेगा उस के अन्तर फिल्में आती रहेंगी और कभी बन्द नहीं होगीं और नक्शे आते रहेंगे लेकिन जब सुरत ऊपर चली जायेगी तो फिर नहीं आयेंगे। इस लिये दुखों से बचने का इलाज यह है कि अपने अन्तर प्रकाश और शब्द को पकड़ो और अगर अन्त समय

तुम्हारे सामने प्रकाश और शब्द आ गया तो बेड़ा पार हो गया।

नाम जो रत्ती एक है, पाप जो रत्ती हज़ार।
आध रती घट सिंचरे, जार करे सब छार॥

अगर हम सोच समझ कर अभ्यास करें तो पांच छः महीने में जिन्दगी बदल जाती है। मगर हम तो आदत के अनुसार अभ्यास कहने बैठते हैं और फिर अपने अन्तर में तरह तरह के ख़्यालात उठाते रहते हैं

रात दिन सिमरण हो रसना नाम का रस ले सदा।
मैं भजूं हित चित से, गुरु के नाम ही को सर्वदा।

वो नाम है पार ब्रह्म और शब्द ब्रह्म, शब्द और प्रकाश, प्रणव, और उद्गीत। संसार से पार जाने के लिए नाम की महिमा है और यही गोसांई तुलसी दास जीने कहा है :--

कलि केवल इक नाम अधारा, श्रुति स्मृति वेद मत सारा।

लेकिन अगर तुम को किसी कामल पुरुष का सतसंग नहीं मिला तो यह नाम तुम को खा जायेगा, इसलिये नाम किसी गुरु द्वारा होना चाहिये ताकि उस के सतसंग से तुम मन को काबू कर सको।

रुप का हो ध्यान, सिमरण नाम का अन्तर में हो।
शब्द का साधन भजन हो, तन की सुध बुध सारी खो।

मैंने तुम लोगों को दुनियां की बातें भी बता दीं और परमार्थ के बारे में भी बता दिया। अगर तुम्हारा ध्यान नहीं बनता तो गुरु क्या करे। मैं बाहर जाता हूं लोग मिलते हैं और कहते हैं कि बाबा जी! मेरा यह काम नहीं हुआ। मैं पूछता हूं कि ध्यान बनता है? नहीं, तो फिर मैं क्या करूं। अपना ध्यान बनाओ। स्वामी जी ने लिखा है कि मेरा शिष्य निधर्न नहीं रह सकता, गो यह बात रोचक है मगर है यह ठीक। जो कुछ किसी को मिलता है वो उसके अपने संकल्प से मिलता है इसलिये अगर तुम गरीब हो तो धन का ख्याल करो, ध्यान बनाओ, मिल जायगा, यह कुदरती असूल है।

तन मन में इन्दरियों में बुद्धि और तुम चित में बसो।
अंग संग दिन रात मेरे घट के भीतर तुम रहो॥
हाथ में आओ करूं व्यवहार मैं उपकार के।
पांव ऐसे हों चलूं मैं पन्थ में करतार के॥

जो आदमी यह समझता है कि गुरु होशियारपुर में या किसी और डेरे में रहता है उस की जिन्दगी कामयाव नहीं हो सकती, गुरु तो एक ताकत है। उस का कोई रूप नहीं, उस को हर समय अपने पास

समझो मैं भी हज़ूर दाता दयाल जी महाराज को धाम में समझा करता था तो वो मुझे लिखते थे ।

फकीरा गुरु तो तेरे पास
गुरु नहीं मथुरा गुरु नहीं काशी गुरु नहीं विच कैलाश ।

लेकिन यह बात मेरी समझ में आती नहीं थी । यह बात समझाने के लिये ही उन्होंने मुझे यह काम दिया था । मैं न गुरु हूं न महात्मा और न ही मुझे गुरु बनने की हवस है । मैं तो यह देखना चाहता था कि सच्चाई क्या है । अब आप लोगों के चरनों की बदौलत बात मेरी समझ में आ गई और सच्चाई का पता लग गया :--

आंख में बैठो जगत में आप की मूरत लखूं ।
कान में बैठो सदा मैं शब्द अनहद का सुनूं ।।
चलते फिरते जागते सोते रहो तुम साथ में ।
सहज में आ जाय परमार्थ की निधी सिद्धी हाथ में ।।

जब तक कोई आदमी गुरु को या मालिक को अपने पास नहीं समझता उस को परमार्थ का फायदा नहीं हो सकता । गुरु बाहर नहीं रहता वो तुम्हारे अन्तर रहता है बाहर के गुरु की यह डयूटी है कि वो तुम को यह विश्वास करा दे कि गुरु तुम्हारे

अन्तर रहता है और यही बात मैं तुम लोगों को समझाता रहता हूं मगर यह जलदी समझ नहीं आती इसकी समझ सतसंग में आती है इसलिये सत्संग की महिमा है ।

मेरा आपा लय तुम्हारे आपे में हो जाय अब ।
सुरत जागे गगन में पृथ्वी में वो सो जाय अब ॥
तू का मैं का मिथया झगड़ा छूटे जीवन मुक्त हूं ।
शुद्ध निर्मल आत्मा हो सुख से आनन्द से जियूं ॥

मैं और तू का झगड़ा कब खतम होता है ? जब आदमी ऊंचा चला जाता है तो फिर वो किसी को याद नहीं करता, न गुरु को और न खुदा को । जो आदमी जिस का ध्यान करता है वो उसी का रूप हो जाता है जैसे भृंगी एक कीड़े को अपने जैसी भृंगी बना लेती है ऐसे ही जिस का मालिक से प्रेम हो जाता है वो मालिक का हो जाता है । इस लिये सन्त को मालिक का अवतार समझा जाता है ।

कौन कहता है तुम्हें भाई कि संसारी बनो ।
मैं यह कहता हूं कि तुम भगती के अधिकारी बनो ।

भक्ति किस की, क्या बाबे फकीर की ? नहीं सन्तों की भक्ति क्या है ? सुनो !

भक्ति सुनाई सबसे न्यारी, वेद कतेब न ताहे विचारी।
सत पुरुष चौथे पद बासा, सन्तन का जहां सदा विलासा॥
सो घर दरसाया गुरु पूरे, बीन बजे जहां अचरज तूरे।

अपने अन्तर प्रकाश और शब्द की भक्ति करो बाहर के गुरु की भक्ति नहीं, इन गुरुओं ने यह पाखंड बना कर दुनियां को अपने पीछे लगाया हुआ है। बाहर के गुरु की भक्ति यह है कि उसके सत्संग में जाओ, उसके बचन सुनो, गुनो, विचारो और उन पर अमल करो, बाकी जो कुछ है वो सांसारिक व्यवहार है। उसके साथ परमार्थ का कोई सम्बन्ध नहीं है। जहां सतसंग घर है वहां लाऊड स्पीकर भी चाहिये, लोगों के बैठने के लिये दरियां भी चाहिये, लंगर भी चाहिये और इन चीज़ों के लिये पैसा चाहिये।

चित रहे गुरु के चरणों में मन रहे गुरु ध्यान में।
चाहे तुम परमार्थी हो चाहे व्यापारी बनो॥

गुरु के चरन हैं प्रकाश, अपने अन्तर प्रकाश में जाओ मगर सब लोगों का प्रकाश खुलता नहीं, मेरा नहीं खुलता था मगर हजूर दाता दयाल जी महाराज से प्रेम बहुत था। उन्होंने मुझे एक तंबूरा मंगवा दिया मैं उसको

बजाता था और अपने अन्तर से स्वभाविक ही निकले हुये भजन गाया करता था। सब के मन की हालत जुदा जुदा होती है। इसलिये गुरु बेहतर जानता है कि इस के लिये कौन सा तरीका बेहतर है। इसलिये गुरु की हदायत पर चलो, जब बात समझ में आ जावे तो फिर गुरु का अहसान बाकी रह जाता है।

कामी तेरे, क्रोधी तरे. पापी तरे अनन्त।
आन उपासिक कृतघन तेरे न नाम रटन्त॥

सब की मुक्ति है मगर जो ग़ैर की इबादत करता हैं उसकी मुक्ति नहीं। जो बाबे फकीर की इबादत करता हैं उसको मुक्ति नहीं, गुरु है शब्द जौर उसके चरण हैं प्रकाश इसलिये प्रकाश और शब्द में जाओ, प्रकाश और शब्द की भक्ति करो। मेरी सेवा करने से और मेरी Radiation से तुम्हारा मन साफ हो सकता है और तुम्हारे दुनियावी काम हो सकते हैं और मेरी बात को समझ कर उस पर अमल करने से तुम्हारा बेड़ा पार हो जावेगा, जिन के मन गंदे हैं सतसंग के प्रभाव से उन के मन निर्मल हो जायेंगे।

हाट में आय हो संसार के सौदा के लिये।
प्रेम का व्यवहार कर के सच्चे व्योपारी बनो॥

हम यहां सौदा करने के लिये आये हैं। प्रेम का सौदा करो, सब से पहले अपने घर वालों से प्रेम करो। हज़ूर महाराज जी ने फरमाया है कि राधास्वामी दयाल प्रेम के समुन्द्र हैं। कहीं बून्द रूप हैं कही लहर रूप हैं, कहीं दरया रूप हैं और कहीं समुन्द्र हैं। जो घर में झगड़ा करता है उस का प्रेम नहीं है। प्रेम से जिन्दगी गुजारों। हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे यही ख्याल दिया था। मैंने अपनी शादी के बाद एक ग़लत ख्याल कैसे लिया? मेरी स्त्री का नाम था "क्रोधू" मुझे यह वहम आ गया कि जब इसका नाम ही क्रोधू है तो इसका काम भी अच्छा नहीं होगा। अगर वो अच्छा काम भी करती तो भी मुझे पंसद न आता था। मैं हज़ूर दाता दयाल जी महाराज के पास गया और सारी हालत बताई। उन्होंने फरमाया कि अपनी औरत को अपने साथ ले कर मेरे पास आओ। मैं अपनी स्त्री को साथ लेकर उनके दरबार में हाज़र हुआ। उन्होंने फरमाया कि फकीर! यह कौन है?

मैंने अर्ज की हज़ूर यह मेरी स्त्री हैं, फरमाया कि नहीं मैं पूछता हूं कि यह कौन है ? मैंने अर्ज की, कि हज़ूर ! यह पंडित मस्त राम जी की बहु है। फरमाया कि नहीं यह मेरी लड़की है अगर तुम इसका अपमान करोगे तो तुम मेरा अपमान करोगे और फिर कहा कि देखो ! कल को तेरे बच्चे होंगे अगर यह मर गई तो बच्चे तुम को संभालने पड़ेंगे।

एक बार मेरे छोटे भाई रायसाहिब सुरेन्द्र नाथ ने मुझे एक एसी चिट्ठी लिखी जिस को मैंने पंसद नहीं किया। मैंने वो चिट्ठी हज़ूर दाता दयाल जी महाराज को भेज दी, साथ ही अपनी तरफ से चिट्ठी लिखी जिस में मैंने लिखा कि मैंने रायसाहिब के साथ यह किया और वो किया मगर उस का मेरे साथ यह सलूक है। उत्तर में हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने जो लिखा वो सुनिये :--

१. फकीर भूल गया कि वो फकीर है।

२. फकीर भूल गया कि उसने फकीरी की कमाई की है।

२. फकीर को अपने एबों का पता नहीं।

४. फकीर भाई की इज्जत और दौलत का जाने या अनजाने में हिस्सेदार बनना चाहता है ।

५. फकीर लोग दुनियां की दौलत और इज्जत को कै कर देते हैं और दुनियां के कुत्ते उसे चाटते हैं ।

६. मैं आशा करता हूं कि मेरा फकीर ऐसा नहीं बनेगा, मैं ने फकीर के साथ कभी सखती नहीं की, मेरा यह खत फकीर की आने वाली जिन्दगी में काम आयेगा । हजूर के इस खत से मेरा दिल बिलकुल साफ हो गया । इसलिये गुरु वो है जो शिष्य की जिन्दगी को संभाले, गुरु वो नहीं जो पैसे ही लेता रहे । मेरे गुरु महाराज फरमाया करते थे कि चार आदमियों की जिन्दगी बनाना बहुत कठिन है और यह जो हज़ारों चेले बना लेते हैं यह कितने आदमियों की जिन्दगीयां बना सकते हैं । देखो तुम आये हो, सच्चाई से चलो अगर पाच छः महीने में तुम्हारी दुकान में बरकत न आये तो मैं फकीरी छोड़ दूंगा, मगर सच्चाई से चलो और बेइमानी मत करो, मालिक बरकत देगा ।

सब को राधास्वामी

सतसंग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

१७ अक्तूबर १९७६

बिन गुरु ज्ञान न उपजे साधु, लो गुरु की सरनाई।
बानी सुन सुन मन में धारो, मिटे भरम दुचिताई॥
गुरु हुए रूप धरा मानुष का. नर हुये जीव चिताया।
जो कोई उन के शरन में आया, ताको अंग लगया।
गुरु चरित्र को देखो समझो, सुनो गुरु की बानी।
बानी सुन सुन मन में धारो, मेटो द्वन्द गिलानी।
कैसे कहूं खोलकर यह मैं, नहीं बैन कोई बूझे।
जब सत संगत आवे प्रानी, तत्व सार तब सूझे।
धन्य धन्य गुरु की लीला अद्भुत, धन्य धन्य उपदेशा।
राधास्वामी मेहर से मेटा, कष्ट कलेश अन्देसा।

राधास्वामी। मेरा जीवन मेरे सामने आता है। छोटी उमर से राम को या भगवान को मिलने का ख्याल पैदा हुआ था। इस सिलसिले में मूर्ति पूजा की। अनुभव ने वहां से हटाया, फिर हजूर दाता दयाल जी

महाराज के चरणों में मौज ले गई और उनके स्वरुप से प्रेम करने लगा। जब ज्ञान हुआ तो बाहर के स्वरुप से भी प्रेम करना छूट गया अब मुझे क्या मिला? क्या मैं अपनी आत्मा से यह पूछने का हक नहीं रखता कि फकीर! एक दिन मर जाना है, तुम हर महीने सत्संग कराते हो, बाहर जाते हो और गुरु बन के लोगों को उपदेश करते हो तुम लोगों को क्या ज्ञान देना चाहते हो? जो ज्ञान गुरु से मुझे मिला मैं बही ज्ञान दुनियां को देना चाहता हूं लेकिन मुझे किसी बात का कोई दावा नहीं कि जो ज्ञान मुझे मिला है आया सन्तों का भी यही ज्ञान है या कोई और है। जो ज्ञान मुझे मिला उस से मेरे भ्रम और वहम चले गये और मुझे शान्ति मिल गई। यह ज्ञान मैं इसलिये बताना चाहता हूं कि मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव संसार को बता जाऊंगा। मैं राम और कृष्ण को मानने वाला था, मेरे कर्म या मौज एक दृष्य द्वारा मुझे हजूर दाता दयाल जी महाराज के चरणों में ले गई, उन्होंने मुझे राधास्वामी मत या संत मत की तालीम दी। इन की बानियों में सब का खण्डन था, इन्होंने सब को अधूरा बताया,

वेदान्त और सूफीमत को भी नीचा बताया और संत मत को सबसे ऊंचा कहा, बात मेरी समझ में नहीं आती थी। लेकिन हज़ूर दाता दयाल जी महाराज से मेरा विश्वास नहीं टूटता था। इसलिये उस समय मैंने प्रण किया था कि इस रास्ता पर सच्चा हो कर चलूंगा और जो मेरा अनुभव होगा वो संसार को बता जाऊंगा। सार बचन नज़्म के बारह मासा के व्यान में कार्तिक माह में लिखा हुआ है :--

संत मता सब से बड़ा, यह निश्चय करके जान।
सूफी और वेदान्ति दोनों नीचे मान।
संत दिवाली नित करें, सत लोक के माह।
और मते सब काल के, यूहीं धूल उड़ाय।

अब तुम सोचो कि भारतवर्ष में वेदान्त को सब से ऊंचा मत माना गया है और धर्मों का शेर कहा गया है लेकिन इन्होंने इस का खन्डन किया। जब बानी की मुझे समझ नहीं आती थी तो उस समय मैं देखना चाहता था कि सन्तों का मार्ग किस लिये बड़ा है। मैं हज़ूर दाता दयाल जी महाराज को तंग किया करता था, चोबीस घंटे उन के पीछे फिरता, अब मैं महसूस करता हूं कि वो दुखी होते होंगे, शाम

को उन्होंने फरमाया कि सुबह समाधि से जब मैं उठूंगा तो उस वक्त मेरे पास आना। सुबह को उन्होंने मेरी झोली में एक नारियल और पांच पैसे डाल कर मुझे तिलक लगाया और मुझे मत्था टेक दिया, फरमाया कि मेरा हुकम मानो, नाम दान दिया करो और सतसंग कराया करो, तुम को सच्चा सत्गुरु राधास्वामी दयाल सतसंगियों के रूप में मिलेगा। मैंने यह काम किया और इससे मुझे आप लोगों की बदौलत सच्चा ज्ञान, सच्चाई और हकीकत हासिल हुये, आप लोगों की वजा से मुझे शान्ति मिली कैसे ? मेरा रूप भारतवर्ष में और बाहर के देशों में लोगों के अन्तर प्रकट होता है लेकिन मुझे कोई पता नहीं होता है और न ही मैं जाता हूं। लोग मरते हैं, कई आदमी कहते हैं कि बाबा जी आये, पालकी लाये या घोड़ा लाये, कोई कुछ और कोई कुछ कहता है, मगर मैं सच्च कहता हूं कि मुझे कोई पता नहीं होता, हज़ारहा आदमी मेरा ध्यान करते हैं लेकिन मैंने तो किसी को नाम नहीं दिया, उनके विश्वास के मुताबक उनके काम होते रहते हैं मैं कुछ नहीं करता, इसलिये मैं कहना चाहता हूं कि ऐ

इन्सान ! जो कुछ तू अपने अन्तर देखता है। यह केवल संस्कार हैं इन की हकीकत कुछ नहीं ! लेकिन तू इनको सत्य मान कर इनके पीछे दोड़ता है और दुख और सुख उठाता है। दूसरी बात यह कहना चाहता हूं कि तुम को जो कुछ मिलता है यह तुम्हारे कर्म, विश्वास और ख्याल का फल मिलता है बाहर से कोई राम, कोई कृष्ण, कोई देवता या कोई गुरु तुम्हारी सहायता करने के लिये नहीं आता, जिस प्रकार का बाहर से तुम को संस्कार मिलता है और तुम उस पर विश्वास कर लेते हो वही तुम्हारे अन्तर में फुरता है। तो संत मत बतलाता है ?

'बिन गुरु ज्ञान न उपजे साधु, लो गुरु की शरनाई।'

गुरु के बिना ज्ञान नहीं मिलता। वो ज्ञान क्या है जिस से हमको शान्ति मिले और सुख मिले और हमारे भ्रम दूर हों ? वो ज्ञान गुरु से मिलता है। उस का इशारा सन्तों ने सैन बैन में किया मगर खोल के नहीं बताया। हो सकता है जीवों के संस्कार और अधिकार को देखते हुए न खोला होगा या समय अनुकूल न देखा होगा, कबीर साहिब ने धर्म दास को यह राज़ बता कर उस का मुंह बन्द कर दिया :—

धर्म दास तोहे लाख दुहाई, सार भेद नहीं बाहर जाई।

स्वामी जी महाराज ने अपनी बानी में फरमाया है :—

संत बिना कोई भेद न जाने, वो तोहे कहें अलग में।

चूंकि मेरे ज़िम्मे जगत कल्यान की डयूटी है इस लिये मैंने जब देखा कि महात्माओं और गुरुओं ने परदा रखा और अज्ञान की बजा से जीव लुट गये और अपनी जायदादें गुरुओं के हवाले कर दीं, तो मैंने इस संसार को लूट से बचाने के लिये इस राज़ को खोल दिया। औरतें ज़्यादा जज़्बाती होती हैं और जज़्बे में आ कर साधुओं की सेवा करती हैं और उनकी मुठी चापी करती हैं जिस का परिणाम आचार व्यवहार के रुप में बुरा निकलता है। गो पांचों उंगलियां बराबर तो नहीं होती, मगर ऐसी बातें सुनने में आती हैं इसलिये मैंने तालीम को बदल दिया कि औरतें महात्माओं का सत्संग तो सुनें मगर उनकी मुठी चापी न करें। और क्या ज्ञान देना चाहता हूं ? कि ऐ इन्सान, तुमको किसी महात्मा ने नहीं तारना, तेरे कर्म, तेरे विश्वास और तेरी नीयत ने तुमको तारना है और या कुछ *Radiation* भी काम करती है।

ऐ मानव जाती ! तुम को किसी ने कुछ नहीं देना अगर देना है तो किसी सच्चे आदमी ने तुमको सच्चाई बतानी है और सच्चा रास्ता बताना है। किसी ने तुमको फूंक नहीं मारनी, जो कुछ किसी को मिलता है। उस को अपने बिश्वास का फल मिलता है। लोग मुझ पर विश्वास करते हैं कोई बात कह देता हूं तो पूरी हो जाती है, बीमार आते हैं, मुझ से प्रसाद ले जाते हैं, उनका विश्वास होता है वो राज़ी हो जाते हैं और मैं बीमार होता हूं तो डाक्टरों के पीछे फिरता हूं। तो फिर आप बताओ कि क्या मैं दूसरों को राज़ी करता हूं ? नहीं, जो लोग दुनियां की आशाओं में फंसे हुये हैं और साधुओं और सन्तों के पीछे फिरते हैं कि उन को दौलत मिल जाय, पुत्र मिल जाय, मैं उनको यह सच्चाई बताने के लिये इस संसार में आया हूं कि दीवानो ! कोई तुम को कुछ नहीं दे सकता. तुम को तुम्हारे ही कर्म का फल मिलेगा, इसलिये अपने कर्म को ठीक रखो और अपनी नीयत को ठीक रखो। राम राम जपो या न जपो। मैंने सन्तों के हालात देखे, उनके लड़के नालायक हो गये, कई एक के लड़के आज्ञाकारी नहीं थे, कई सन्तों

के घरों में औरतों से झगड़ा था। इसलिये मैं सोचता हूं कि अगर सिरफ कानों में उंगलियां डालने से ही कोई सन्त बन सकता होता तो फिर इन सन्तों को तकलीफ क्यों हुई ? अपने कर्म का फल सब को मिलता है। मुझे जितना यश मिला यह सब मेरे प्रारब्ध कर्मों का फल है। यहां कोई नेकी करता है तो उस को बुराई मिलती है। कई आदमी कोई खास काम भी नहीं करते, मगर फिर भी वो दौलतमन्द हैं और कई आदमी सुबह से शाम तक काम करते हैं लेकिन फिर भी रोटी पूरी नहीं होती, क्यों ? यह सब अपने अपने कर्मों का फल है, यह ज्ञान कौन देता है ?

बिन गुरु ज्ञान न उपजे साधु लो सतगुरु शरनाई।

गुरु ज्ञान, समझ, और विवेक देता है सतसंग से क्या मिलता है ?

बिन सतसंग विवेक न होई, राम कृपा बिन सुलभ न सोई।

सुखमनि साहिब ने लिखा है :—

सत पुरुष जिन जानया, सत गुरु तिस का नाओ।
तिस के संग शिश उधरे, नानक हरि गुण गाओ।
जीभा एक उस्तुती अनेक, सत पुरुष है पूर्ण बवेक।

पूर्ण विवेक का नाम ही सत पुरुष है क्योंकि मेरे जिम्मे ऋण है, इसलिये गुरु ऋण को चुकाना चाहता

हूं। बहुत कुछ तो उतार दिया है। अब अगर मेरा शरीर छूट भी जाय तो मुझे कोई अफसोस नहीं है। मानव जाती को कहना चाहता हुं कि भूल जाओ कि कोई राम या कृष्ण या हज़रत मुहम्मद या हज़रत ईसा या कोई गुरु तेरी मदद करेगा। तेरी मदद करने वाला तेरा कर्म, तेरी नीयत और तेरा विश्वास है। जैसा ख्याल वैसा हाल, जैसी करनी वैसी भरनी और जैसी नीयत वैसी मुराद। गुरु ने तुम को सिरफ सच्ची समझ दे कर तुम्हारे ख्याल को बदलना है। गुरु से समझ और ज्ञान मिलता है। हम लोगों को गुरु के रूप का पता नहीं है और औरतें तो खास कर दीवानी हो कर सन्तों के पीछे फिरती हैं। मैं खुद अज्ञान में था। तीन माह की छुटी बसरे बग़दार से आता, घर नहीं जाता था। हज़ूर दाता दयाल जी महाराज के पास गुज़ार कर चला जाता था। वो फरमाया करते थे कि फकीर! तुम क्यों भटक गये हो।

काहे बौराना हाय फकीरवा।
तेरे घट में माल खजाना, भया दिवाना हाय फकीरवा।

जा की चाह में खोजत डोले, मन में समाना, हाय फकीरवा।
तीर्थ व्रत सभी तेरे भीतर, नहीं कहीं जाना हाय फकीरवा।
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी नित गुण गाना हाय फकीरवा।

मगर मुझे समझ नहीं आती थी इसलिये मुझे यह ज्ञान देने के लिये उन्होंने यह काम दिया था। अब आप लोगों की बदौलत मुझे यह समझ आ गई इसलिये आप लोगों को सच्चा सत्गुरु मानता हूं और दयाल दास आदि की सेवा करता हूं। जिस बात को सन्तों ने राज़ में रखा, मैंने उस को खोल दिया, इस से हानि भी है, क्योंकि अज्ञानी लोग अज्ञान में जो आनन्द लेते हैं वो खतम हो जाता है। दुसरे इस अज्ञान की वजा से इन्सानी नसल बट गई और आपस में मज़हबी नफरत और द्वेष पैदा हो गया। सन १९४७ में इस नफरत की वजा से देश की तकसीम हुई और लाखो आदमियों के सिर कट गये। इस वक्त भी देखो दुनियां में क्या हो रहा है, इस दशा को देखकर कुदरत ने मेरे दमाग़ को हिलाया, ताकि मैं सच्चाई ब्यान कर जाऊं कि ऐ इन्सान! तू मज़हबों

के झगड़ों में पड़ कर बरबाद हो गया और दुनियां की बरबादी का कारण बन गया। दुनियां को सच्चाई ब्यान करने के लिये राधास्वामी मत आया, लेकिन आज कल क्या हो रहा है ? इन में गद्दियों के झगड़े, एक गद्दी की दूसरी गद्दी से नफरत और आपस में मुकदमा बाज़ी। इसलिये मैंने इस राज़ को खोल दिया ताकि समझदार लोग असलीयत को समझ जायें। आप लोग आते हैं मैं नहीं चाहता कि कोई इस वजा से मेरी इज़्जत करे कि मेरा रूप उस के अन्तर प्रकट होता है, मैं नहीं जाता और न ही कोई और गुरु किसी के अन्तर जाता है, यह सारे महात्मा और गुरु मेरे सामने तो मानते हैं कि हम नहीं जाते लेकिन पब्लिक में कोई नहीं बताता। मैं निर्बंध पुरुष हूं और लोगों को आज़ाद करने आया हूं। सत पुरुष की बानी को सुनो और उस पर अमल करो तब बेड़ा पार होगा। मुझे कपड़े देने से या मुझे रुपये देने से या मेरी सेवा करने से या मानवता मन्दिर बना देने से तुम को यह ज्ञान नहीं मिलेगा। कोई चीज़ देना तो तुम्हारे प्रेम का ज़ज़्बा है, जो दोगे वो मिलेगा, चेले तो अपने विश्वास से तर

जायेंगे लेकिन जो गुरु चेलों को अज्ञान में रख कर उन को लूट के खा जाते हैं वो अपने कर्म के फल से बच कर कहां जायेंगे।

"बिन गुरु ज्ञान न उपजे साधु लो गुरु की शरनाई।
बानि सुन सुन मन में धारो, मिटे भरम दुचिताई।

गुरु की शरण में जाओ, बानी को सुनो और विचारो इस से तुम्हारे भ्रम चले जायेंगे। तुम्हारा मन जो हर समय चक्कर में रहता है वो चक्कर खतम हो जावेगा और तुम असलीयत को समझ जाओगे। अगर मेरा रूप किसी के अन्तर प्रकट हो गया तो वह आ के मेरी सेवा करेगा, मुझे रुपये देगा और मेरे गुण गायेगा लेकिन अगर मैं उसको सच्चाई ब्यान नहीं करता तो उस की सेवा तो मुझे खा जायेगी। मैं समझता हूं कि जिन महात्माओं ने संसार को सच्चाई नहीं बताई, इसीलिये उन को आखरी उमर में तकलीफ हुई।

गुरु हुए रूप धरा मानुष का, नर हुए जीव चिताया,
जो कोई उनकी शरन में आया, ताको अंग लगाया,
गुरु चरित्र को देखो, समझो, सुनो गुरु कि बानी;
बानी सुन सुन मन में धारो, मेटो द्वन्द गिलानी।

द्वन्द है दोपना, तुम लोगों की वजा से मेरा द्वन्द खतम हो गया। जब से आप लोगों से मुझे पता लगा कि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होता है और उनके काम कर जाता है लेकिन मैं नहीं होता, तो मुझे निश्चय हो गया कि जो कुछ मेरे अन्तर प्रकट होता है यह और है और देखने वाला और है। इन सब को देखने वाला और इन सब का साक्षी जो है वो मैं हूं इसलिये में द्वन्द से निकल गया ओर मुझे शान्ति मिल गई। मुझे समझ में आ गया कि मैं कौन हूं। मगर तुम लोगों को यहां तक पहुंचने की जरूरत नहीं। तुम लोग दुनियां का सुख चाहते हो। लेकिन एक बात याद रखो कि इस द्वन्द की रचना में सुख के साथ दुख भी है। जब तुम रात को सो जाते हो तो स्वप्न में तुम को क्रोध आ जाता है। किसी को मारते हो तो तुम्हारा हाथ हिलता है, क्रोध में किसी को कुछ कहते हो तो तुम्हारी जबान हिलती है। सपने में ख्याली औरत बना लेते हो, उससे भोग करते हो और तुम्हारा वीर्य गिर जाता है। कहने का मतलब यह है कि स्वप्न में जो तुम्हारे ख्यालात हैं उन पर तुम्हारा वश नहीं हैं लेकिन उनका

असर फिर भी तुम्हारे शरीर पर पड़ता है। तो जो ख्यालात तुम जाग्रत में जान बूझ कर उठाते हो चाहे वे अच्छे हैं और चाहे वे बुरे हैं तो उनका असर तुम पर क्यों नहीं पड़ेगा, इसलिये आम दुनियां के लिये वेद मार्ग है। अच्छे विचार रखो, नेक काम करो, किसी के साथ हेरा फेरी न करो ताकि अच्छे ख्यालात का तुम पर अच्छा असर पड़े और तुम्हारी जिन्दगी सुख से गुज़र जाय। सन्तों का मार्ग तो केवल उनके लिये है जिन को यह यकीन हो जाय कि इस दुनियां में जन्म लेना ही महापाप है। जब तक किसी को यह यकीन नहीं होता, उस को नाम देना ठीक नहीं इसलिये मैं किसी को नाम नहीं देता। एक आदमी खुद तो आवागवन से बचना चाहता है मगर दूसरों को पैदा करके इस संसार में आवागवन में फंसाता है। वो दिखावे का काम करता है और धोके बाज़ है। हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने मेरे नाम एक शब्द में लिखा है :--

तेरा रूप है अदभुत अचरज, तेरी उतम देही।
जग कल्याण जगत में आया, परम दयाल सनेही।

मुझे नहीं पता कि मैं जगत के कल्यान के लिये आया हूं या नहीं, मेरी समझ में तो यह आया है कि जब कर्म का फल सब को भोगना पड़ता है तो फिर कर्म अच्छा करो। कर्म के फल से तो न अवतार बचे और न सन्त बचे। श्री मद् भागवत लिखने वाले व्यास जी थे। अर्जुन ने गीता के अठारह अध्याय कृष्ण जी के मुंह से सुने। व्यास जी लिखते हैं कि अर्जुन नर्क में गया तो फिर क्या सिद्ध हुआ कि कृष्ण जी के मुंह से गीता के अठारह अध्याय सुनने वाला अर्जुन अगर नर्क में गया तो तुम बेशक गीता का पाठ करते रहो। सुखमनी साहिब में लिखा है :--

प्रभ सिमरन ते सुखवन्ते।
प्रभ सिमरन ते धनवन्ते।
प्रभ सिमरन ते दुशमन टरे।

मगर इतिहास बताता है कि कई महपुरुषों के रिशतेदारों ने उनके साथ हद दर्जे की दुशमनी की। अमली जीवन और है और किताबें पढ़ना या किताबें लिखना कुछ और है। मैं भी गिरता रहता हूं। मैं अपनी डयूटी पूरी करना चाहता हूं और यह भी जानता हूं कि नक्कारखाने में तूती की आवाज़ को

कोई नहीं सुनता। जहां तक मेरी अपनी ज़ात का सम्बन्ध है मैं सच्चाई पंसद इन्सान हूं दूसरों को मैं कुछ नहीं कहता, हां! मेरे हां अगर कोई बात हो तो मैं मुंह पर कह देता हूं। मैंने दयाल दास से कह दिया था कि दरवाज़ा बन्द करके अभ्यास मत कराया करो। योगनी से मैंने कह दिया कि बेटी! मैंने मरयादा को कायम रखना है। अगर मैं ग़लती खा जाऊं तो दुनियां नुकता चीनी करेगी। मैं सदा वो बात कहता हूं जो मेरे अनुभव में आई है। मैं कहा करता हूं कि ऐ इन्सान! तू अपनी नीयत को साफ रख, राम राम बेशक मत जप। क्यों? जब तक तुम्हारी नीयत साफ नहीं है तुम्हारा कर्म ठीक नहीं हो सकता और जब कर्म ठीक नहीं है मन ठहर नहीं सकता और जब तक मन नहीं ठहरता तुम राम राम नहीं जप सकते। दूसरी बात यह है कि मेरा अपना जीवन मेरे सामने है। मेरी छोटी आयु की शादी और विषय विकार का जीवन था इसलिये मेरा मन बहुत चंचल था। जिन का बचपन में ब्रह्मचार्य नष्ट हो जाता है उनका मन कमज़ोर हो जाता है। अगर

शरीर में ताकत है तब तुम मन को वश मैं कर सकते हो वरना नहीं। इसलिये अपने बच्चों की संभाल करो। मेरे पास नौजवान लड़के और लड़कियां आती हैं। मैं उनकी अशान्ति का कारण जानता हूं, इसलिये अपनी औलाद का ख्याल रखा करो। अपनी औलाद के नालायक हो जाने के बहुत हद तक तुम खुद जिम्मेदार हो, क्यों! पेट में बच्चा है और स्त्री पुरुष फिर भी काम भोगते हैं और वही काम के संस्कार बच्चे में जाते हैं। और वो बच्चा समय से पूर्व ही कामी हो जाता है। जिस सच्चे ज्ञान की इस वक्त जरूरत है मैं वही ज्ञान आप लोगों को बता रहा हूं। इसलिये अपने और अपने बाल बच्चों के चाल चलन का ख्याल रखो। मेरे पास कई एसी औरतें आती हैं जिन को लेकोरिया की बिमारी है और वो अशान्त हैं। मैं कहां से उन को शान्ति दूं? इसलिये मैंने तालीम को बदला है कि ऐ इन्सान! अपने चाल चलन को ठीक रख और अपने ख्यालात को शुद्ध रख :—

कैसे कहूं खोल कर यह मैं, नहीं बैन कोई बूझे।
जब सत संगत आवे प्राणो, तत्व सार तब सूझे।

मैंने खोल कर बताया है, साफ ब्यानी करने से पैसा नहीं आता, मुझे कौन देता है ? सिरफ चन्द आदमी जिन को मेरी बात की समझ आ गई है वे देते हैं। मैं अगर परदा रखता तो करोड़ों का मालिक होता मैंने सैन वैन नहीं किया और सच्चाई का डन्डा हाथ में लिया। मुझे रुपये देने से नहीं बल्कि मेरी बात पर अमल करने से तुम्हारा बेड़ा पार होगा। मैं तुम लोगों को तत्व सार बता रहा हूं। पहले मैंने खुद तत्व सार को समझा कि मैं कौन हूं, कहां से आया हूं और शरीर क्या है। बाप ने जो खुराक खाई, उस से खून बना, फिर वीर्य बना, वीर्य में कीड़े पैदा हुए, उस एक नज़र न आने वाले कीड़े से आप 6-6 फुट के जवान बन गये। कोई डाक्टर बना, कोई प्राइम-मिनिसटर बना और कोई प्रेज़ीडेंट बना, मगर हमारा आद क्या है ? एक कीड़ा। उस कीड़े में रोशनी थी, वो रोशनी खुराक द्वारा हमारे अन्तर आई; इसलिये हम प्रकाश स्वरुप हैं। लेकिन हम अपने आपको भूल गये हैं। कोई गुरु बनता है, कोई चेला बनता है, कोई बाप बना और कोई बेटा बना। जो चीज़ शरीर और मन को देखती है, प्रकाश

को देखती है और शब्द को सुनती है और इन सबकी साक्षी है वो चीज़ क्या है ? पता नहीं। जब कभी प्रकाश और शब्द से इलैहदा हो जाता हूं तो फिर समझ आती है कि मैं चेतन का एक बुलबुला हूं और वो मालिक एक तत्व है। उस अवस्था में खमोशी आ जाती है। जब से मुझे यह ज्ञान हुआ है मेरे सारे भ्रम और वहम दूर हो गये हैं, मगर अभी तक मुझ से वहां ठहरा नहीं जाता, यह सार तत्व जिसकी समझ मुझे आप लोगों द्वारा आई। मैं स्वभाविक कोई बात कह देता हूं तो लोग कहते हैं कि वो पूरी हो जाती है। क्यों पूरी हो जाती है ? क्योंकि मेरा अन्तर बाहर एक है, मुझ में छल कपट या धोखा और फरेब नहीं है। Radiation (रेडियेशन) काम करती है और होने वाली बात मेरे मुंह से निकल जाती है। मैं कुछ नहीं करता। मैं एक दफा अपने एक मित्र के घर गया, मेरे मुंह से निकल गया कि तेरे पोता होगा और उस का यह नाम रखना। उसके पोता हो गया मुझे कैसे पता लगा ? Vibrations धारें आती हैं, मैं कुछ नहीं करता और न ही मुझे कुछ पता होता है लोग

मरते हैं, कहते हैं कि बाबा जी आ गये हैं और नूर ही नूर हो गया है। कोई कहता है कि पालकी लाये हैं, कोई कहता है हवाई जहाज़ लाये हैं लेकिन मैं कहीं नहीं जाता। छः सात वर्ष हुए मैं सहारनपुर के समीप एक गांव में गया। वहां एक आदमी मेरे पास आया वो शराब पीता था, उसके मां बाप ने कहा कि बाबा जी! आप दया करो ताकि यह शराब छोड़ दे। मैंने उस को समझाया, वो कहने लगा कि मैं अब शराब नहीं पिऊंगा। पिछले साल वो आदमी मुझे मिला और कहने लगा कि बाबा जी। मैंने आपसे वायदा किया था कि मैं शराब नहीं पिऊंगा लेकिन बीस दिन के बाद मुझ से रहा न गया और मैंने फिर शराब पी ली। आप आये और मुझे बहुत नाराज़ हुए, आप की आखों में इतना तेज था कि मेरे कपड़े जल गये। उसके बाद मैंने फिर शराब नहीं पी। अब मैं तो गया नहीं और न ही मुझे कोई पता है। चूंकि उस ने अपने वायदे को तोड़ा, इसलिये उस के मन ने ही मेरा रूप धारण कर के उस से यह कहा। इस राज़ को सन्तों ने और गुरुओं ने छुपाया और

दुनियां को बेवकूफ बना कर अपनी गद्दियां बनाई, मोटर कारें खरीरी और Air-Conditioned (ऐअर-कन्डीशन) मकान बनवाये। इन लोगों ने हमारे अज्ञान से खूब मज़े उड़ाये। मैंने इस राज़ को खोल दिया क्योंकि मैं आया ही सच्चाई ब्यान करने के लिये हूं। सच्चाई यह है कि ऐ गृहस्थियो ! तुम को सुख देने वाला तुम्हारा अपना ही मन है, गुरु ने तुम को केवल राज़ बताना है। मैंने सच्चाई ब्यान कर दी अब मेरी आत्मा पर कोई बोझ नहीं। वो आदमी कहता है कि मैं प्रकट हुआ और उस को नाराज़ हुआ, मेरी आंखों से आग निकली और उस के कपड़े जला दिये, उस दिन के बाद मैंने शराब नहीं पी, अब यह क्या मामला है इस का मुझे पता नहीं, मगर मैं नहीं गया।

धन्य धन्य गुरु की लीला अद्भुत, धन्य धन्य उपदेशा।
राधास्वामी मेहर से मेटा कष्ट कलेश अन्देशा।

एसा उपदेश जो मैं देता हूं दूसरा कोई नहीं देता। हजूर दाता दयाल जी महाराज किताबों में तो लिख गये मगर ज़वानी नहीं बताया। अन्होंने अपने आखरी सतसंग में कहा कि लोग कहते हैं कि

मैं वहां प्रकट हुआ और यह किया और वो किया लेकिन मैं कहीं नहीं गया। बानी में आता है :—

"गुरु बिन घट में राह न चलना।

लोगों ने यह समझा हुआ है कि गुरु मूर्ति को अपने अन्तर में रख कर चलो तो तुम पहुंच जाओगे। यह सरासर ग़लत है। जो गुरु रूप तुम्हारे अन्तर में प्रकट होता है वो बाहर का गुरु नहीं है। वो तो तुम्हारे ही मन का बनाया हुआ रूप है। वो तो तुम को तुम्हारे संस्कारों के मुताबिक हदायत देगा। बाहर के गुरु से हदायत ले कर अपने अन्तर में चलो यह है इस का मतलब। अगर तुम्हारे मन के ख्यालात अच्छे हैं तो वो रूप तुम को अच्छी तरफ ले जायेगा अगर तुम्हारे मन में बुरे ख्यालात हैं तो वो रूप तुमको बुरी तरफ ले जायेगा। मैं ऐसा क्यों कहता हूं ? एक औरत डेरा ब्यास की सत संगन है। हज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज की शिष्य है। उस ने शादी नहीं कराई। फिर उमर ज़ियादा हो गई, किसी मैजिसट्रेट से शादी करना चाहती थी मगर न हुई, मेरे पास भी आया करती थी। एक

दिन आई और कहने लगी कि बाबा जी ! रात को स्वप्न में सजूर बाबा सावन जी महाराज आये और फरमाया कि बेटी। अब मैं तेरे लिये खावन्द कहां से तलाश करूं, इतने में आप आ गये और उन्होंने आप के साथ मेरी शादी कर दी। अब आप सोचो क्या हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज आये थे या क्या मैं गया था ? नहीं, उस औरत का जो अपना ख्याल था वही उस के सामने आया। दुनियां मन के चक्कर में आई हुई है। संतमत मन के चक्कर से निकालता है, शरत यह है कि किसी सत पुरुष की संगत मिल जाये। तुम लोग बहुत भाग्यवान हो जिन को मेरे जैसे सत पुरुष का संतसग मिलता है। मैं तुम को धोका नहीं देता और न ही तुम को अपने पीछे लगाना चाहता हूं, हजूर दाता दयाल जी महाराज का एक शब्द है :—

मन के नाच सारे नाचें, ऋषि मुनि नर देवा।
ऊंची नीची चाल चलें, द्वन्द जग की अग्नि जलें।
दुविधा की गोद पलें, पावें नहीं मेवा।
दुचिता पड़ विपता सहें, भली बुरी बात कहें।
सम चित कर नाहीं रहें, करें काल सेवा।

मन से बचे भक्त दास, सुख दुख की त्याग आस।
राधास्वामी संग निवास. गुरु के नाम लेवा।

आप लोग आये हैं आप लोगों पर मेरा कोई उपकार नहीं, मैं तो अपना कर्म भोगता हूं मैंने प्रण न किया होता और न मैं यह काम करता। मेरी ९० साल की उमर हो गई है कोई न कोंई रोग लगा रहता है। मगर क्या किया जाये :—

कर्म प्रधान विश्व कर राखा।
जो जस कीन तैसो फल चाखा।

आप लोगों को आसान तरीका बता देता हूं कि जहां तक हो सके अपनी ज़ाती गर्ज़ के लिये किसी को तंग मत करो किसी से हेरा फेरी मत करो और किसी से दुश्मनी मत करो। जो आदमी इन असूलों पर चलता है वो कोई पाप नहीं कर सकता। तुम देखो कि एक मीजिस्ट्रेट दूसरों को कैद की सज़ा देता है या फांसी की सज़ा देता है, मगर उसे कोई पाप नहीं क्योंकि उस की उस में कोई ज़ाती ग़रज़ नहीं है। क्या मुझे मन्दिर में पैसे की ज़रूरत नहीं है, मगर मैं हेरा फेरी नहीं करता और अपनी अन्तः करण के विरुद्ध कोई काम नहीं करता। तुम लोगों

के पैसे को अनुचित ढंग से व्यय करना पाप है। हमेशा यह बात याद रखो कि कर्म के फल से कोई वच नहीं सकता, हां, अगर तुम को ज्ञान हो गया है तो ज्ञान की वजा से तुम दुख को कम महसूस करोगे। मगर अगर तुम यह समझो कि तुम ने गुरु धारण किया हुआ है और तुमको कोई तकलीफ़ न हो या कोई नुकसान न हो तो यह नहीं हो सकता। अज्ञान में आ के दुनियां लुट गई। रह गया स्वाल अभ्यास का, सुनो, जिस का विषय विकार का जीवन है उस का मन महा चंचल होगा और वो अभ्यास नहीं कर सकता। उस का अभ्यास बनेगा ही नहीं, क्यों ?

जहां काम तहां नाम नहीं, जहां नाम नहीं काम ?
रवि रजनी दोऊ न बसें एक ठौर एक याम।

इस का मतलब यह नहीं कि तुम लोग औरतों से अलग हो जाओ। औरत आदमी की साथी है मेरी औरत मर गई, मैं महसूस करता हूं अब किसी वक्त कोई बात होती है तो चुप हो जाता हूं। मालिक करे कि बच्चे की मां, नौजवान औरत का पती और बूढ़े आदमी की औरत न मरे, औरत नेक सन्तान पैदा

करने के लिये है। अच्छी औलाद पैदा करो। कौम को बनाने वाली मातायें हैं। जिस ख्याल को लेकर सन्तान को पैदा करोगे वैसा ही बच्चा पैदा होगा। राम राम करना बहुत दूर है, दुनियां में कोई सुखी नहीं, इसलिये मैंने तालीम को बदला है। रह गया परमार्थ, जिस का ब्रह्मचर्य ठीक नहीं उस की सुरत नहीं चढ़ेगी। अभ्यास करो ज़रूर मगर सुमिरन और ध्यान करो। शब्द योग सब के लिये नहीं है। शब्द योग के बाद अनुभव होता है। अगर केवल शब्द योग ही है तो वो तुमको तारेगा नहीं। मुझे तुम लोगों ने तारा, इसलिये मैं आप का आभारी हूं। मेरे पास कुछ है नहीं वरना आप को मैं सब कुछ दे देता। जिन लोगों से मुझे ज्ञान मिला, मैं उनकी बहुत इज़्जत करता हूं। मैं सच्चाई ब्यान करता हूं और मेरी सच्चाई को सुनकर यह मौजूदा गुरु लोग कांपते हैं, अगर मैं सच्चाई ब्यान नहीं करता तो मैं दोषी हूं। मैं तुम लोगों को अपने जाल में नहीं फंसाना चाहता हूं। सुमिरन और ध्यान करो अगर रूप नहीं बनता तो कोई हर्ज नहीं। प्रकाश को प्रकट करने की कोशश करो। अभ्यास का एक वक्त निश्चित

करो और प्रति दिन अभ्यास करो। इस से तुम को अभ्यास की आदत पड़ेगी। जो लोग अभ्यास छोड़ देते हैं वो ग़लती करते हैं। यह एक दिन का काम नहीं, मन की मल एक दिन में दूर नहीं होती, इस को समय लगता है। अगर तुम दुनियां से तरना चाहते हो तो सब से जरूरी बात यह है कि सतगुरु या मलिक को अपने से जुदा मत समझो वरना तुम लक्ष स्थान पर नहीं पहुंच सकते। बाद में गुरु का अहसान रह जाता है। देखो! मां बच्चे को दूध पिलाती है, उस के सामने नंगी हो जाती है, मगर जब बच्चा जवान हो जाता है तो फिर वो उस के सामने नंगी नहीं होती। ऐसे ही गुरु करता है, जब तक चेला अज्ञानी है, गुरु उसको छाती से लगाता है लेकिन जब चेले को समझ आ जाती है तो फिर उस को गुरु की ज़रूरत नहीं रहती, मगर जब तक गुरु का चोला है वो उसकी इज़्जत करता है और सेवा करता है और करनी भी चाहिये।

गुरु की सेवा क्या है? गुरु की तालीम को फैलाना, आप क्रियात्मिक होना और अपनी रहनी से

दूसरों को फायदा पहुंचाना। मैं जब कई दफा अकेला होता हूं तो सोचता हूं कि फकीर! तुमने यह क्या मकड़ी का जाला बना लिया, क्या तुम किसी को कुछ दे सकते हो? हां और नहीं। जो लोग मेरी बात पर विश्वास कर लेते हैं उन के काम हो जाते हैं और उन को फायदा पहुंच जाता है, दूसरों को नहीं। मेरे पास जो भी दुखी आता है, मैं चाहता हूं कि उस का भला हो जाय, मैं उन को शुभ भावना देता हूं। जिनका विश्वास होता है उन का काम हो जाता है। पिछले साल बैसाखी पर मैं बीमार था। सिरसा से एक औरत मानवता मन्दिर के लिये एक झंडा बनाकर लाई। उस के कोई बच्चा नहीं था, डाक्टरों ने कह दिया था कि तुम्हारे बच्चा नहीं हो सकता, उस के मन में बच्चे की इच्छा थी, मुझे तो पता नहीं था मैंने अशीर्वाद दी कि तेरी मनोकामना पूरी हो। उस को विश्वास हो गया कि बाबा जी ने मुझे अशीर्वाद दी है अब मेरे बच्चा जरूर होगा उसका विश्वास था, इसलिये उसे लड़का हो गया। डाक्टर भी हैरान थे। क्या मैंने कुछ किया? नहीं, उस का विश्वास काम कर गया। मेरे

पास कोई दुखी जीव आता है मैं सच्चे दिल से चाहता हूं कि उस को सेहत मिले, खाने को रोटी मिले, पहनने को कपड़ा मिले, रहने को मकान मिले और मन को शान्ति मिले। मालिक को भी तो शान्ति के लिये ही याद किया जाता है।

दाता ! आप ने मुझे काम दिया था, मुझे नहीं पता कि मेंने ठीक किया है या ग़लत किया है। आप ने तालीम को बदलने का हुकम दिया था, मैंने जो समझा वो कहा, मेरी नीयत साफ है। अभ्यास के बारे मुझे कई चिट्ठियां आती हैं मैं अपने अनुभव के आधार पर कहता हूं। जिस किसम की आदमी की प्रकृति होती है और जिस किसम के प्रभाव सियारों से या खुराक से आदमी को मिलते हैं उस के अनुसार आदमी के अन्तर प्रकाश और शब्द होता है। खट चक्करों वाले भी अपने अन्तर में प्रकाश देखते हैं और शब्द सुनते हैं। जिस किसम के गृहों के प्रभाव से तुम्हारी प्रकृति बनी और तुम्हारे ख्यालात बने हैं उनके अनुसार तुम्हारे अन्तर में प्रकाश होगा और शब्द होगा, जिस आदमी के नीच ग्रह पड़े हुए

हैं उस को शब्द नहीं होगा, यह मेरा ज़ाती अनुभव है। एक बार एक ज्योतिषि ने मुझे बताया था कि आप के ग्रह यह साबित करते हैं कि आप कोई ऐसा काम करोगे जो आज तक किसी ने नहीं किया। तो मैंने आज तक जो कुछ भी किया उस के लिये विवश हूं। ग्रहों के अनुसार ही आदमी परमार्थ की तरफ आता हैं। अगर किसी के अन्तरी शब्द नहीं खुलते तो इस का यह मतलब नहीं कि वो परमार्थ का अधिकारी नहीं। वो इन सब को छोड़ कर आखरी स्टेज पर पहुंच जायेगा और उस की मुक्ति हो जायगी। सच्चे दिल से अपने अन्तर में अपने इष्ट से प्रेम किया करो, तुम्हारी सच्ची चाह निचले दरजों के न खुलने पर भी तुमको आखरी मंज़ल पर पहुंचा देगी। अब मेरे अन्तर निचले शब्द नहीं होते क्यों ? क्योंकि मैं इन से आगे चला गया हूं। अपने आप को मालिक के हवाले करते जाओ, तुम अपने आप वहां पहुंच जाओगे। जिन को डाक्टर बनना होता है, उन को मुरदे चीरने पड़ते हैं दूसरों को नहीं। रेडियो बनाने वाले ने ३० साल के परिश्रम

के बाद रेडियो तैयार किया। तैयार हो जाने के बाद सब को बराबर फायदा है और सब ही सुनते हैं। मालिक को प्रेम और सच्चाई की ज़रूरत है, दरजों की जरूरत नहीं, इसलिये सच्चे बन के चलो, मेरा अभ्यास अब क्या है ? केवल शरणागतम्। इसी में प्रकाश और शब्द हो जाता है, और अगर नहीं भी होता तो मैं परवाह नहीं करता, मुझे समझ आ गई कि यह मेरी प्रकृति के मुताबक होंगे। दुनियां का मालिक तो एक है। मालिक न बाबा फकीर है और न कोई और गुरु है, कबीर साहिब ने लिखा है

सतगुरु चीनो रे भाई।
सतनाम बिन सब नर बूड़े, नरक पड़ी चतुराई।
वेद पुराण भागवत गीता, इन को सभी दरढ़ावै।
जाको जन्म सुफल रे प्राणी, सो पूरा गुरु पावै।
बहुत गुरु संसार कहावैं, मंत्र देत हैं काना।
उपजैं बिनसैं या भौसागर, मरम न काहू जाना।
सतगुरु एक जगत में गुरु हैं, सो भव से कड़िहारा।
कहै कबीर जगत के गुरुवा, मरि मरि लें औतारा।

गुरु तो एक ताकत है Perfection का नाम गुरु है, सच्चे बन कर अपने अन्तर में चलो तुम्हारे ग्रहों

के मुताबक तुम्हारे दरजे खुलेंगे। मैंने जिन्दगी में और शब्द तो सुने, मगर शंख नहीं सुना लेकिन मुझे इस का कोई अफसोस नहीं। अभ्यास के वक्त दुनियां को भूल जाओ।

Be true to your ownself

सब को राधास्वामी।

संसार ही स्वर्ग है

लेखक :—सेठ दुर्गादास साहिब, चण्डीगढ़।

एक माता ने अपने साल डेढ़ साल के बच्चे के आगे खिलौने रख दिये। बच्चा खिलौनों के साथ खेलने लग गया। माता को समय मिल गया। वह अपने घर के काम काज में लग गई। बच्चा खिलौनों से खेलता २ उदास हो गया। अपनी माता को न पाकर रोने चिल्लाने लगा। इसकी माता दौड़ती हुई आई और अपने बच्चे को अपनी गोद में ले लिया।

संसार में जीव का यही हाल है। खिलौनों में मस्त है। इनके खेल से आनन्द ले रहा है। इस खेल को जीवन समझने लग गया है। बेटा, बेटी, पोते, पोतियां, बहन भाई मां, बाप, हाट हवेली, व्यापार और धन ये सब खिलौने ही हैं। इनमें जीव बुरी तरह फंसा हुआ है। खेलते खेलते उदास होता ही नहीं। न कभी अपनी माता याद आई, न अपने पैदा करने वाले और अपने मालिक को कभी याद किया।

फिर मालिक कैसे दर्शन देवे और जीव को अपनी गोद में कैसे लेवे। ऐसे जीव के लिये यह संसार ही स्वर्ग है। कौन इस स्वर्ग को छोड़ कर जाना चाहता है। कौन है जिसका दिल इन खिलौनों से उदास हुआ। एक गाथा है वह आपको सुनाता हूं। जो नारद मुनी के चेले का हाल हुआ वही सब संसार के साथ हो रहा है। यह इसकी अकेले की ही कहानी नहीं है। यह सारे संसार की कहानी है।

एक बार नारदमुनी भगवान विष्णु के दर्शनों के लिए गये। भगवान सैर कर रहे थे। नारदमुनी साथ हुये, प्रणाम किया। देखते क्या हैं कि एक नगरी बसी हुई है, बहुत सुन्दर, अच्छे सुन्दर महल मकान, चौड़ी चौड़ी सड़के, हरी २ घास, फलदार पेड़, आबशारे, नहरे और तालाब, रंग बरंगे पक्षी, लाल पीली मच्छलियां, एक दिल को लुभाने वाला दृश्या था। नारदमुनी ने पूछा, महाराज! इस नगरी का क्या नाम है। भगवान ने कहा, इस नगरी का नाम स्वर्ग नगरी है। नारदमुनी ने चकित होकर कहा कि महाराज, नगरी तो बहुत सुन्दर है। हर एक प्रकार के यहां पर आराम का सामान हैं लेकिन मैं हैरान हूं यहां पर कोई मानव नहीं रह रहा, तो विष्णु भगवान

बोले । भाई ! यहां कोई संसारी आने को तैयार नहीं। तो नारदमुनी बोले, महाराज ! मेरा एक भक्त है, मैं इसको यहां ले आऊं ? विष्णु भगवान बोले बहुत अच्छा ले आओ । नारदमुनी आज्ञा पाकर मृत्यु लोक आगये । सीधे अपने भगत के मकान पर गये । भगत ने अपने गुरु का सत्कार किया, प्रणाम किया. सेवा की नारद मुनी ने अपने भगत से कहा कि चलो मैं तुमको स्वर्ग नगरी ले चलूं । वहां पर बड़ा आराम सुख और शान्ति है । कोई काम नहीं करना पड़ता । खाने को स्वादिष्ट फल और अच्छे खाने मिलेंगे । सुन्दर महल रहने के लिये हैं । चलो मेरे साथ चलो । विष्णु महाराज जी ने यह सुन्दर नगरी बसाई है ।

भगत कहने लगा महाराज ! अभी मेरे लड़के छोटे २ हैं ज़रा बुद्धिमान हो जायें फिर चलूंगा । कुछ समय बाद भगत बीमार हुआ इसके प्राण निकलने लगे तो नारदमुनी जी आगये । कहने लगे अब तुमको स्वर्ग ले चलू तो भगत कहने लगा कि बच्चे बहुत गहरी नींद में रात को सो जाते हैं इनको पता तक नहीं रहता, मैं चाहता हूं इनको कुछ सम्भाल रहे वरना धन धान्य सब लुट जायेगा ।

नारद मुनी बहुत अच्छा कह कर चले गये और भगत मरने के वाद कुत्ते की योनी में आ गया और अपने घर की देख भाल करता। एक रात कुत्ता बहुत भौंक रहा था। एक लड़के को क्रोध आया। इसने कुत्ते का सिर फोड़ दिया और कुत्ता मरने लगा। नारदमुनी प्रकट हुये अपने भगत से कहने लगे अब तुमको लेचलूं स्वर्ग में। देखा मज़ा। अपने पुत्र के हाथों मारा गया। तो भगत ने कहा महाराज! ये तो मूर्ख हैं। इनको समझ नहीं है। सारा धन नष्ट कर चुके हैं। भूखे मर रहें हैं। कुछ मैंने धन सम्भालकर एक कमरे में दबाया हुआ है किसी समय इनके काम आजाये। मैं चाहता हूं इस धन की देख भाल करूं। कुत्ते के प्राण निकल गये और इसने सांप का जन्म लिया और कोठरी में धन पर बैठा रहता। कुछ दिनों बाद लड़कों को धन की आवश्यकता हुई। बड़े लड़के ने कहा मुझे याद है कि हमारे बाप ने इस कोठरी में धन दबाया था। फिर क्या था, लगे सब इस कोठरी की ज़मीन खोदने। सांप निकल आया। सब डेरे लेकिन एक लड़के ने सांप का सिर फोड़ दिया और सांप लगा मरने। नारदमुनी जी आ गये। अपने भक्त से

कहने लगे। चलो स्वर्ग ले चलूं। अब तुमने अपनी आंखों पुत्रों का व्यवहार देख लिया। अब तो सम्भलो। शिक्षा लो, कुछ होश करो। इस संसार में कौन अपना है। भगत बोला महाराज! आप अपना काम करें। मैं तो अपने बच्चों को देख देखकर आनन्द लेता हूं। वह सांप नाली का कीड़ा बन गया। नाली के एक ओर बैठा अपने बेटे बेटियों को देखा करे।

नारद मुनी जी बहुत उदास हुये। बापिस आ गये। सोचते जा रहे थे कि मैं विष्णु महाराज जी को क्या उत्तर दूंगा कि इस संसार में कोई जीव स्वर्ग जाने को तैयार नहीं है। इतने में इनको एक सूर दिखाई पड़ा इससे कहने लगे चलो तुमको स्वर्ग ले चलू। वहां बड़ा सुख आनन्द है। दूध पीने को अंगूर खाने को, हरी २ घास कोई तुमको मारेगा नहीं। तो सूर ने पूछा कि क्या बहां विष्टा है? नारदमुनी जी ने उतर दिया स्वर्ग में विष्टा का क्या काम। तो सूर ने कहा तब मैं नहीं जाऊंगा। नारदमुनी को स्वर्ग में रहने के लिए कोई भी जीव इस संसार में न

मिला। वह वापिस विष्णु महाराज जी के दरवार में पहुंचे और प्रार्थना की कि महाराज कोई पुरुष स्वर्ग नगरी में रहने के लिए तैयार नहीं है। आप ठीक फरमाते हैं।

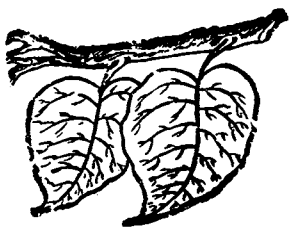

पत्र व्यवहार द्वारा ज्ञान

पत्र नं० १ होशियारपुर
११-१२-७६

प्यारे भाई ! राधास्वामी

तुमने गर्भ को नरक बताया। किसी को क्या पता कि जो बच्चा मां के पेट में होता है उसे दुख होता है या नहीं ? यह तो हमारी कल्पना है। अगर दुनियां इस बात को मानले कि बच्चा जब गर्भ में होता है तो नरक में होता है तो हम जितने लोग बच्चे पैदा करते हैं सभी पापी हैं। जीवों को गर्भ में डाल कर उन्हें मुसीबत देते हैं। क्या तुमने बच्चे पैदा नहीं किये ? क्या तुम काम नहीं भोगते ? सभी ज़बानी कहते हैं १० मास जीव को गर्भ में बहुत कष्ट होता हैं। होता होगा। मैं नरक को क्या समझता हूं ? जो आदमी संसार में दुःखी रहता, चिन्ता, फिकर हाय हाय करता, आंसू बहाता है एक तो वो नरक में है दूसरे जो आदमी सपने में रहता हुआ, किसी

को सांप का काटना, किसी का समुद्र में गिर जाना, किसी को भय लगता है, वो नरक में है। तीसरे जब आदमी मरने लगता है, उस के सामने फिल्म चलती है, जिसके सामने डरावनी शकलें आती हैं, यमदूत आते हैं वो नरक में है। अगर कोई इन तीनों नरकों से बचना चाहता है तो वो न तो नरक में आवे, न दुःख सुख मानसिक भोगे। इस नरक स्वर्ग से बचने का कोई इलाज ?

मेरा साहित्य पढ़ो। जब तक किसी को ज्ञान नहीं होता कि मन में जो कुछ फुरता है, अच्छा या बुरा यह सब माया है या कल्पना है। वह स्वर्ग नरक के धक्के खाने से बच नहीं सकता। संतों ने इसी वास्ते नाम दान का सिलसिला जारी किया कि अपना इष्ट प्रकाश व शब्द रखो ताके यह समझ आवे कि जितनी मानसिक कल्पना है, ये है नहीं भासती है। मुझे यह ज्ञान सतसंगियों से मिला। लोगों के अन्तर मेरा रूप प्रकट हो कर दवाई बताता, मरते समय लेने जाता है, सुरतें चढ़ाता है मगर मैं नहीं होता, तो इससे मुझे साबित हो गया। कि जो

कुछ भी मन की फुरना है, विचार हैं, ये सब के सब कल्पित हैं।

इसलिये ऐ दोस्त! वह जो नक्शे बना २ कर तुम मुझे भेजते हो, इनकी बजाय अपने आपको प्रकाश व शब्द के साधन में गुजारो, ताके तुम मरण जन्म व स्वर्ग व नरक के धक्कों से बचो। और तुमको क्या लिखूं? जो जिन्दगी में समझा वह कहता रहता हूं व कोशिश करता हूं कि मैं अपना इष्ट पारब्रह्म याने प्रकाश व शब्द ब्रह्म याने नाम को पकडूं।

आपका
फकीर

पत्र नं० २

प्यारे भाई ! राधास्वामी

बांये या दांये कान के शब्द मनुष्य के आंतरिक विचारों को प्रकट करते हैं।

जिनमें विषय विकार, हेराफेरी, धोखाबाजी, मतलब परस्ती, स्वार्थी पना होता है उन्हें जब भी आवाज आएगी बाएं तरफ से ही आएगी। जो नेक दिल, परोपकारी, दयालु होते हैं। उन्हें हमेशा दांए तरफ से आवाज आएगी। जो सिर्फ उस मालिक से ही प्रेम करते हैं। अन्य किसी से वास्ता व वासना नहीं वे ऊपर का शब्द ही सुनते हैं।

जिस तरह पेशाब करने की, टट्टी जाने की, खांसी की अलेहदा अलेहदा नाड़ीयां देह में है। इसी तरह मन के ख्यालात दिमाग में अलग अलग नालीयों से ताल्लुक रखते हैं। यें नाम इसी वास्ते हरशक्स को नहीं मिलता।

यह उनके लिये है।

विषयों से जो होय उदासा, परमारथ की जा मन आशा।
धन संतान प्रीति नहीं जाके, खोजत फिरे साध गुरु जागे।

इसलिये पहले अपने मन के विचार शुद्ध करो, फिर जब साधन करोगे लाभ दायक होगा।

आपका,

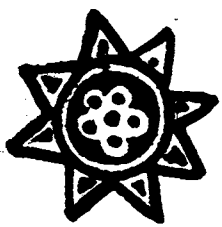

पत्र नं० ३

डाक्टर नागी साहिब,

राधास्वामी

खत मिला, सुनो, अगर अभ्यास में खुशी, मस्ती और आनन्द मिलता है तो आप का अभ्यास ठीक चल रहा है। गुरु नाम है प्रेम, खुशी आनन्द, शब्द ज्ञान का, अगर मेरा रूप आप के अन्तर प्रकट नहीं होता तो कोई हर्ज नहीं। अगर प्रकट हो भी गया तो फिर भी आगे जाने के लिये यह रूप तुम को छोड़ना पड़ेगा, अपने अन्तर में प्रेम श्रद्धा और विश्वास से साधन किया करो, रूप के प्रकट न होने का कारण मैं जानता हूं। अगर आप बिल्कुल अज्ञानी होते तो रूप फौरन प्रकट हो जाता। क्योंकि ज्ञान और विवेक साथ है इसलिये अब गुरु के रूप को प्रेम खुशी और आनन्द समझो, कोई नुकसान नहीं है। आपको मेरे काफी सत्संग नहीं मिले इसलिये आप को भ्रम आता रहता है। आप के जीवन का अन्त शुभ होगा।

आपका

फकीर

‡ धन्यवाद ‡

मानव मंदिर में पूज्यपाद दादा जी के शोक व हर्ष का समाचार प्रकाशित होने के पहले व बाद में पूज्यपाद दादा जी निजधाम वासी श्री कृषक जी महाराज के प्रेमी सत्संगी जनों के श्रद्धांजलि व करूणापूर्ण सांत्वना पत्र हमें बराबर मिल रहे हैं। निस्संदेह हम सभी को इन आशीर्वादों को पाकर बड़ी सांत्वना मिली है। मैं मानव मन्दिर द्वारा उन सभी परमादरणीय महानुभावों के लिये कृषक परिवार की ओर से व इस केन्द्र की ओर से कृतज्ञता और धन्यवाद प्रकट करता हूं तथा सदैव ही दया भाव बनाये रखने की प्रार्थना करता हूं।

तेजेन्द्र गुप्ता

मेरा कर्म

सहायक मन्त्री मानवता मन्दिर ने फकीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट का हिसाब दिखाया, उसने कहा कि आंखों का हस्पताल खुलने के बाद मन्दिर के कुल व्यय के लिए कम से कम 135000/-रुपया की धन राशि प्रति वर्ष चाहिए। सुना, रात को अपने अन्तर सोचा कि ऐ फकीर। तू ने यह क्या किया ? एक गढ़े से निकला और दूसरे कुऐ में गिरा। मगर अपना जीवन याद आता है। मुझको वचपन से ही किसी वस्तु की तलाश थी वह मुझ को दाता दयाल महर्षि शिव ब्रत लाल जी महाराज के चरण कमलों में ले गई। उस पवित्र विभूति ने मेरी उस तलाश को मिटाने के लिऐ मुझ पतित और अज्ञानी जीव को छाती से लगाया। जीवन की प्रत्येक दिशा में मुझे उत्साह, सहारा और शक्ति दी। सत्य वस्तु, सच्चाई और शान्ति का रास्ता बताया। जब में पंथ में आया था तो मैंने भी प्रण किया था कि अपना

अनुभव संसार को बता जाऊंगा और हजूर दाता दयाल जी महाराज ने फरमाया था फि चोला छोड़ने से पूर्व शिक्षा में परिवर्तन कर जाना। मुझे नहीं पता कि जो कुछ मैंने अनुभव किया वह ठीक है या ग़लत। आत्मा सत्य प्रिय है। जो कुछ मैंने गृहस्थि, शिष्य और गुरु होने की स्थिति में अनुभव किया वह मुझ को एक ऐसी अवस्था की ओर ले जा रहा है जहां न मैं, न तू, न गुरु, न चेला, न राम, न रहीम और न करीम। मगर अभी तक उस धुर धाम में मैं ठहर नहीं सकता। मालूम नहीं क्यों ? मैं यह कहने में विवश हूं कि या तो मेरे कर्म या इस संसार की रचना करने वाले की इच्छा।

मेरे इस कर्म भोग वश मैंने इन्सान बनो की आवाज़ उठाई। धर्मों और पंथों में जो रोचक और भयानक बातें धर्म और पंथ चलाने के लिए और दुनियां को पीछे लगाने के लिए कही गईं, उनको मैंने साफ कर दिया। समझ में आया की जब तक मनुष्य जीवन है वह आपस में प्रेम, सहायता और सेवा के अधीन है। अध्यात्मिक जीवन भी नाम, ध्यान प्रकाश और शब्द का अधीन है। इसलिए मैंने मन्दिर में यथा

शक्ति अनाथों, अन्धों और ग़रीब विद्यार्थियों की सहायता करने का काम किया। आर्थिक हीन लोगों के लिये होम्योपैथिक, दांतों और आंखों का हस्पताल खोला। कई जीव भ्रम और शंका ग्रस्त होते है, उ[redacted] को अपने भविष्य अथवा भाग्य की चिन्ता होती है। इनके लिये ज्योतिष का प्रबन्ध किया। जो सज्जन साधन या अभ्यास करना चाहते हैं उनके लिए भी प्रबन्ध किया। मगर जब डिप्टी सैक्रेटरी ने मन्दिर का हिसाब बताया तो ख्याल आया कि इतना व्यय करना कठिन मालूम होता है। यदि मैं परदा रखता जिस प्रकार मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होकर उनकी सहायता करता है, मरते समय ले जाता है और दवाईयें बताता है, भारत वर्ष में ही नहीं विदेशों में भी, तो जितना भी धन चहता, मान चाहता, ले सकता था। मगर मेरी आत्मा ने नहीं माना।

मानव मन्दिर पत्रिका या अन्य किताबें जो मानवता मन्दिर में छपती हैं मैंने उनका कोई मूल्य नहीं रखा।

बिना मूल्य साहित्य बांटने का कारण मेरा ब्रह्मण के घर का जन्म है। ब्रह्मण के लिए वेद

बेचना पाप है। क्योंकि किताबों में जो कुछ लिखता हूं वह मेरा अनुभव है। इसलिए मैंने इसकी कोई कीमत नहीं रखी। रात सोचा कि माया के चक्कर में तो तू आ गया, अब बता तू क्या करेगा? मेरा निर्णय यह है।

जो सज्जन मेरे सहित्य को पढ़ते हैं यदि उन की अत्मायें इस बात को मानती हैं कि मेरे इस काम द्वारा मानव जाति का भला हो सकता है तो वह मानवता मन्दिर की सहायता करें। मन्दिर में एक पैसे की हेरा फेरी नहीं होती है। ट्रस्ट है और विधिवत हिसाब है। जब तक इस सहायता से काम चलेगा चलायूंगा। अगर न चला तो हस्पताल बन्द कर दूंगा। दाता का हुकम है कि शिक्षा वदल जाना मानव मन्दिर जारी रहेगा। यदि किसी कारण यह भी न चल सका तो मौज मालिक। दाता दयाल के ऋण से उतीर्ण हो जाऊंगा। इसलिये जो लोग मानव मन्दिर पढ़ते हैं उनसे यह मेरी हाथ जोड़ कर प्रार्थना है कि पत्रिका का प्रकाशन बढ़ा रहा है। जिन की रुची इस के पढ़ने में न हो वह न मंगवायें।

ऐ मेरी जिन्दगी के बनाने वाले ? मेरे हैपने को बनाने वाले। तेरा प्रेम था। मालूम नहीं मैंने जो कुछ किया अथवा समझा, ठीक है या ग़लत है। मैं शरणागत हूं। जिस रास्ते तेरी मौज है उसी रास्ते से मुझे ले चल। अब उस दिन की प्रतीक्षा करता हूं जब अपनी हस्ती को खोकर उसी परम तत्व में चला जाऊं।

फकीर।

फकीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट, होशियारपुर द्वारा बिना मूल्य बांटा जाने वाला साहित्य

1. **THE SECRET OF SECRETS**
   Written by His Holiness Pt. Faqir Chand Ji Maharaj.

2. अनुभवसार (हिन्दी) दूसरा प्रकाशन
   लेखक श्री कुबेर नाथ श्रीवास्तव, एडवोकेट, रसड़ा ।

3. मानव मन्दिर (हिन्दी)—मासिक पत्रिका ।

मिलने का पता :—

सैक्रेट्री :
मानवता मन्दिर, होशियारपुर ।

हृदय से तुमको प्यार करता हूं और चाहता हूं :—

दुख सुख न व्यापे तुमको, सदा रहे आनन्द बहार।
यही खुशी मक़सद है जिन्दगी, समझा सार का सार॥
मजहबों पंथों में क्या धरा, सुरत है सार का सार।
सुरत ही असली तत्व है, नर तन का आधार॥
सुरत का आदि अनाम पद, मन बुद्धी से वह पार।
जिसने समझा गुरु मता, भव से होगया पार॥

तुमको मौज ने कार्य हो ऐसी संस्था में दिया है जहाँ तुम सुखी और प्रसन्न रह सकते हो।

Letter of Data Dayal to Mahatma Gulab Chandji Anand of Varanasi.

I am grateful to note that you evince so much interest in and for the cause of R. S. Dham. I cannot express my thanks for it. Really my ideas are cosmopolitan and I treat R. S. Faith as universal Spiritual Church of the world. I shall be happy to have you in our midst on the occasion of the Bhandara. Agnostics, Etheists, Scientists, Materialists and any other Ists may participate in the ceremony and I shall accord them hearty and cordial welcome. Hindus, Muslims, Sikhs, Jains, Christians and others too may come and exchange ideas without entering into unpleasant controversy. I equally invite other brethren, be they Aghories, Kabir, Nanak, Dadu Panthies and even those who are opposed to

Regd. No. 26265/74
MANAV MANDIR

NW—HSP- 7

ADDRESS

To

72. Sh. Anand Rao ji
H. No1. —3—17
Khalasi-Gudda
Nr. Laxmi-Narain Mandir.
Secundrabad. (A.P.)

From :

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR.

और हमारा जीवन बड़ा शानदार बन जाय। इस बात की इच्छा प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में स्वतः ही विद्यमान है और प्रत्येक व्यक्ति यही चाहता है कि उसका व्यक्तित्व और अस्तित्व आदरणीय और श्रेष्ठ हो जाय। ऐसे व्यक्ति बहुत कम दृष्टिगोचर होंगे जो अवनति और मानरहित दशा में पड़ा रहना चाहते हों। इस प्रकार की इच्छा भी विशेषतः स्वाभाविक हमारे हृदय का गुण है और यह बड़ा प्रमाण है कि हम उन्नति और श्रेष्ठतर होने के लिये ही उत्पन्न हुये हैं और उन्नति के ही अभिलाषी हैं।

यह बात थोड़ा सा विचार करने पर हमारी समझ में आ सकती है क्योंकि प्रत्येक प्रकार के भाव-विचार हमारे मन ही के भीतर भरे पड़े हैं। सामग्री सब कुछ विद्यमान है केवल इससे कार्य लेने की आवश्यकता है। इस कार्य लेने का ज्ञान हमको नहीं है। सतसंग में जाने से हमारे भीतर जो ज्ञान दबा हुआ पड़ा है, वह उभार पर आजाता है। जो वस्तु हम में नहीं है उसे हम अपने भीतर कैसे उत्पन्न कर सकेंगे, यह कठिन बात है। यदि कोई व्यक्ति यह कहे कि हम उसे दूसरों से प्राप्त कर सकते हैं तो वह भी त्रुटि पर होगा और झूठ समझा जायगा। माँग तांग की वस्तु से कार्य नहीं निकलता और न वह कभी अपनी हो सकती है। इसके अतिरिक्त उसके साथ हमें सहानुभूति भी कभी न होगी और न उसकी ओर हमारा आकर्षण ही उत्पन्न होगा।

कोई व्यक्ति हमसे इसका प्रमाण चाहेगा कि सब कुछ हमारे भीतर कैसे विद्यमान है इसका प्रमाण यह है कि इसकी इच्छा हमारे भीतर गुप्त है। बच्चा उत्पन्न होते ही प्रश्न करने और खोज की सोपानों से पार जाने का इच्छुक प्रतीत होता है। वह क्या चाहता है?

उसे तीन बातों की इच्छा रहती है। प्रथम बात यह है कि वह जीवन चाहता है जिसके कारण से वह उत्पन्न होते ही दूध

मछली को स्वभावतः पानी से प्रेम है। वह एक क्षण भी पानी से पृथक नहीं रह सकती। उसे जल से पृथक करदो, क्षणमात्र में तड़प तड़प कर मर जायगी। उसे पानी में डालदो तो वह फुदकती हुई और खेलती हुई दृष्टिगोचर होगी। इसी प्रकार हम भी सत, चित् और आनन्द के सागर की मछलियाँ ही हैं। इससे हम कभी किसी दशा मेंभी प्रथक, अपरिचित अथवा भिन्न नहीं हैं। यह कारण है कि उनकी हमको इच्छा है, तड़प है और अभिलाषा है।

हम क्या हैं? इस पर प्राणी बहुत कम विचार करता है। हम सत, चित् और आनन्द हैं। ब्रह्म क्या है? इसका भी ज्ञान गिने चुने व्यक्तियों को होता है। ब्रह्म भी हमारे समान सत, चित् आनन्द कहा जाता है और हमारा उसके साथ सदैव का सम्बन्ध है। हम उससे भिन्न नहीं, जो वह है, वही हम भी हैं। अज्ञानी जीव इस बात का बहुत विरोध करें किन्तु वह कभी इस सिद्धान्त के विरुद्ध कोई प्रमाण नहीं ला सकते। जिसका जी चाहे इस सिद्धान्त को तोड़ने का भरसक प्रयत्न करके देखले, किन्तु वह सदैव ही असफल रहेगा।

ऐसी सामग्री का हमारे अन्तर में विद्यमान रहना यह सिद्ध करता है कि हम उन्नति के अभिलाषी हैं। क्योंकि हम ब्रह्म की सन्तान हैं और इसी उन्नति को चाहे वह सांसारिक हो अथवा परमार्थिक, हम बेखटके और निडर होकर निर्विरोध ब्रह्म ही कह सकते हैं। ब्रह्म ही हमारा आदर्श है और ब्रह्म ही हमारा इष्ट है। वह हमारे अन्तर में है और हम अपने हृदय के पर्दों को फाड़कर उसे अपने ही भीतर खुले हुये नेत्रों से देखने के जिज्ञासु हैं। हमारे जीवन का एक एक क्षण इसी कार्य के लिये व्यय हो रहा है। रूप निश्चय ही प्रथक प्रथक हैं। हमारे कार्य करने की विधि में भी निश्चय ही भिन्नता है किन्तु हम जा किधर रहे

हैं, उसी की ओर हमारा पग बढ़ता हुआ चला जा रहा है। हम उससे मिलना चाहते हैं और मिलकर एक हो रहना चाहते हैं।

धर्म, पंथ व्यर्थ हमारे साथ विरोध करके हमारे भावों-विचारों के कुचलने का प्रबंध कर रहे हैं। तर्कशास्त्र व्यर्थ हमसे लड़ झगड़ कर हमें असमंजस में डाल रहे हैं। हम धन क्यों चाहते हैं? हम मान-प्रतिष्ठा के इच्छुक क्यों हैं? हम संस्कार, अधिकार और पद को क्यों मेन देते हैं? क्योंकि यह धन, मान-प्रतिष्ठा और मद ही ब्रह्म है। वह हममें और हमारे भीतर विद्यमान है। कोई हमें रोकता क्यों है? हमको क्यों अपने भाव विचारों के अनुसार कार्य नहीं करने देते? क्या निर्धनता, अवशता और अनाधिकार ही ब्रह्म है? कभी नहीं। यह समझ समझ का फेर है। प्राणी भ्रम और संशय में पड़कर पथ भ्रष्ट होरहे हैं। इसके अतिरिक्त और कोई बात नहीं है। तुम स्वयं सोच देखो। वास्तविकता समझ में आजायगी और तुम सन्तुष्ट हो रहोगे।

इन वस्तुओं की खोज में हमारी बेचैनी, शीघ्रता, असंतोष तथा लोभ लालच यह सब स्पष्टतः बता रहे हैं कि हमको किसी पूर्ण धन, पूर्ण आदर, मान, पद और शक्ति की लालसा है और यह सभी ब्रह्म है। ब्रह्म के अतिरिक्त यह हो क्या सकती हैं? यह कभी भी सम्भव नहीं है कि आंशिक धर्म, मान प्रतिष्ठा, शक्ति हमको सन्तुष्ट कर सके। जिसको देखिये लालच में आगे ही बढ़ता हुआ चला जारहा है और वह उस समय तक बराबर बढ़ता ही चला जायगा जब तक कि पूर्णता के पद को प्राप्त न कर लेगा। इसी कमाल का नाम ब्रह्म है।

अब विषय स्पष्ट हो गया। तात्पर्य समझ में आगया। हमारे हृदय में उन्नति की सामग्री विद्यमान है। मन के भीतर अधिकार और संसार का पदार्थ जो प्रत्येक व्यक्ति के भीतर छुपा हुआ है वह व्याख्या का कार्य करता हुआ उसे जीवन का अंश बनाना

चाहता है। इसी अधिकार और संस्कार के गुण को चमका कर उसको कार्य के योग्य बनाने का साधन ही मन की गढ़न्त है। इस साधन से मन के एकाग्र करने का रहस्य समझ में आजाता है। मन की एकाग्रता ही योग और मिलाप है। और योग और मिलाप ही प्रसन्नता है जो जीवन का लक्ष्य है।

मौज (लेखक—परम दयाल जी महाराज

ऐ विश्वप्रेमी ! खत मैं लिखू, क्यों इसका मुझको पता नहीं।
जाने मौज दयाल ही, मुझको कोई पता नहीं ॥

अभी एक कोई सज्जन ईश्वरसिंह हैं, वे लिखते हैं कि एक सप्ताह के भीतर उन्होंने मुझे दो बार अपने अन्तर प्रकाश स्वरूप में देखा आदि आदि। पत्र पढ़ा:—

चूँकि मैं नहीं था खयाल हुआ, यह क्या है जग का खेला।
इन्सान का मन विचित्र है, करता है नाना विधि खेला ॥
हुई आँख बंद खत छूट गया, विस्माधि आ गयी थी।
घट में चढ़ी सुरत मेरी, तन मन को भूल गई थी ॥
शब्द अनाहद गूँज उठा, प्रकाश का चक्र चलने लगा।
कुछ देर के बाद आंख खुली देखा, वही मकान मेरा था ॥
अब चेतन्ता मैं हूं।

शुकराना करता दयाल का हूं, जिसने मिटाया अज्ञान मेरा।
सुरत फंसी मन में थी, करती रहती थी मेरा तेरा ॥
अब हालत मेरा बदल गयी, जिन्दगी ने नया शकल लई।
कौन करे कर्म यहाँ, मिट गया हैरा फैरा मेरा ॥

आहा ? दाता दयाल जी का शब्द याद आता है।

फ़क़ीरा जा भवसागर पारा
जग है दुविधा जग दुचिताई, जग दुई व्यवहारा।
दुःख सुख राग द्वेष विष अमरत, यह सब द्वन्द पसारा ॥

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

लिख रहा हूँ जीवन के निज अनुभव अपने और कुछ औरों के आधार पर है। यद्यपि मैं जानता हूँ कि नक़्क़ारखाने में तूती की आवाज़ कोई नहीं सुनता। किन्तु तूती को तो बोलना है। कोई सुने अथवा न सुने। प्रत्येक व्यक्ति को फल उसकी नीयत का मिलता है।

जहाँ तक हो सकता है मैं संसार की भलाई के लिये कार्य करता हूँ। अपने घर के भेदों को भी छुपाये नहीं रख सकता। सुनो! मैं बसरा बग़दाद में कर्मचारी था। मेरे माता-पिता घर पर थे। हमारे एक निकट सम्बन्धी का पुत्र चरित्रहीन होने के कारण अपने रुपये पैसे को नष्ट करता था। मेरे घर वालों और चचेरे भाई ने इस नीयत से कि उसकी भूमि लेकर अपना घर वहाँ बनायें, उसको ऋण देना आरम्भ कर दिया जब ऋण बढ़ गया तो उसकी भूमि ले ली। जब मैं बसरे से वापिस आया तो मैंने देखा कि हमारा घर नई भूमि में बना हुआ था। चूँकि मैं इस रहस्य अथवा ज्ञान को जानता था कि इस घर के लिये किस नीयत से भूमि ली गई है और इसका परिणाम नीयत के अनुसार क्या होगा। मैंने स्पष्ट कहा कि न भाई और न पिता ही इस मकान में कोई न बसेगा और ऐसा ही हुआ। मेरे भाई ने पूना में कोठी बनवा ली। और मैं होशियारपुर में रहता हूँ। चचेरा भाई मर गया, सन्तान स्वतन्त्र हो गई। घर बिना बसे पड़ा हुआ है।

भारत वासियों मेरे नेत्रों में आँसू हैं, जो मेरा अनुभव जीवन में हुआ वह भारत के कल्याण हेतु गुरु ऋण उतारने हेतु लिख रहा हूँ। कोई सुने या न सुने मुझे इसकी परवाह नहीं है। यदि त्रुटि पर नहीं हूँ तो इन्हीं दोषों के कारण अथवा हमारे बुरे कर्मों का परिणाम है कि हमें इस संसार में आये दिन दुख, आपत्ति और कष्ट आते रहते हैं। अधिक लिखा नहीं जाता।

मनुष्य बनो के नियम

१—शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टिकोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाचार, सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है।

२—सन्त महात्माओं और ऋषियों की बाणी को सरल सुबोध और साधारण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक, उन्नति कारक, तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जायगा।

४—किसी धर्म पन्थ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

५—यह पत्र हर मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा :

६—लेखों को घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक को होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जायँ।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नंबर व पता साफ़ साफ़ लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जवाबी कार्ड आना चाहिए।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुचे तो पहले अपने यहाँ डाकखाने से पूछ ताछ करके वहाँ से जो उत्तर मिले वह अगला अंक निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुंचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य जासकेगी अन्यथा नहीं।

९—नमूना ।) के टिकट मिलने पर ही भेजा जा सकेगा।

१०—एक वर्ष से कम के ग्राहक नहीं बनाये जायँगे। जो किसी भी मास से बन सकते हैं।

११—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजने चाहिये मनिआर्डर कूपन पर अपना पता साफ़-साफ़ लिखना चाहिए। और पते की तबदीली भी।

मैनेजर—**गुन्शीलाल गोविल** (विश्वप्रेमी) मजिस्ट्रेट प्रथमश्रेणी बेंच
"मनुष्य बनो कार्यालय" (दयाल कम्पाउण्ड, पेच जामाजी)
यू० एस० जैन रोड, अलीगढ़ (उ० प्र०)

Regd. No. A 808

हमारे यहां की पुस्तकें

१–मनुष्य बनो हिंदी		।।=)
२–जागृत जीवन ,,		।।।)
३–मानवधर्म प्रकाश उर्दू १।।) हिंदी		।।।)
४–सन्तमत सार हिंदी		१)
५–फ़क़ीर शब्दावली ,,		।।=)
६–आत्मिक आदर्श ,,		।।।)
७–राधास्वामी मत ,,		।=)
८–आकाशीय रचना उ. ।।), हिंदी		।।)
९–सार भेद	,, ।।)	,, ।।=)
१०–शब्द सार		,, ।।।)
११–मनोकामना देवी		।=)
१२–नय्यरे अनवर उर्दू		।।।)
१३–आवागमन	,, ।।।)	हिंदी १)
१४–सदाये फ़क़ीर ,,		।=)
१५–हयाते नौ ,,		।)
१६–सचाई ,,		।)
१७–विष्णु संहिता हिन्दी		।।)
१८–शिव [illegible]		१।।)
१९–[illegible]		।।।)
२०–[illegible]		।।।)
२१–[illegible] भगवत हिन्दी		१।।)
२२–[illegible] शब्द [illegible] हिंदी		।।=)
२३–[illegible] योगी हिन्दी		।)
२४–[illegible] विद्या हिन्दी		।।)
२५–दस अवतार तिरंगा		।।)
२६–परमार्थ सुधार हिन्दी		।।।)
२७–गृहस्थी गुरु उर्दू		।।।)
२८–भाग्य को बढ़ाओ हिन्दी		।)
२९–निष्कलंक अवतार हिंदी उर्दू		।।)
३०–विश्वहितैषी उ. १।।) विश्वप्रेमी		।।)
३१–तरक्क़ी का राज़ उर्दू		।=)
३२–जगत कल्याण, जगत निस्तार		
३३–जगत उद्धार उर्दू	२) १।।)	१।)
३४–यथार्थ शांति संदेश उर्दू ।।) हिन्दी		।)
३५–क़ानूने खयाल हिन्दी		१)
36--Message of Peace		0-10-0
37--Truth & Reality		0- 6-0
38--Independence Day Leaflets		0- 2-0
39--Real Independence		0- 5-0
40--L[illegible] of Data Dayal		0-12-0
41--Light on Anandyog		0- 3-0

प्रका[illegible] व मैनेजिंग एडीटर
[illegible]लाल गोविल (विश्वप्रेमी)
"[illegible]ष्य बनो कार्यालय"
[illegible]म्पाउण्ड, पेच जामा जी
[illegible]० जैन रोड, अलीगढ़।

कृपया न मिलने पर निम्न पते पर लौटा दें :—

ग्रा० संख्या 120/121 "मनुष्य बनो कार्यालय"

दयाल कम्पाउण्ड, पेच जामाजी अलीगढ़ (उ० प्र०)

श्रीमान्..........